



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र



• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 40 • 12 - 18 जुलाई, 2021

प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 10-07-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

ॐ मित्रु वाणी ॐ

सत्पुरुष

कलीव रंक गरीब नें,
बले कायर पुरुष कंगाल।
त्यां पुरुषां नें दोहिली,
सत पुरुषां री चाल।।

नपुंसक, रंक-निर्धन, कायर
और कृपण, इनके लिए दुर्लभ
है सत्पुरुषों की चाल।

माया से यथार्थ को छिपाने का प्रयास न हो : आचार्यश्री महाश्रमण

भांतखेड़ा, 8 जुलाई, 2021

धर्मार्थ, परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी आज 98:5 किमी विहार कर राधादेवी रामचंद्र मंगल इंस्टीट्यूट पधारे। परम पावन ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी चेतना, अशुद्ध चेतना है। चेतना के दो प्रकार किए जा सकते हैं—एक विशुद्ध चेतना, दूसरी अशुद्ध चेतना।

सर्वथा कर्म-मुक्त चेतना विशुद्ध चेतना हाती है। वह मोक्ष गई हुई, सिद्धों की चेतना होती है। बाकी जितनी भी सांसारिक चेतनाएँ हैं, वे आत्माएँ कर्म से युक्त होती हैं। किसी आत्मा के आठों कर्म लगे हुए होते हैं। किसी-किसी आत्मा के सात कर्म लगे होते हैं, एक मोहनीय कर्म चला गया। कई आत्माओं के केवल चार कर्म लगे होते हैं।

इस प्रकार अशुद्ध चेतनाएँ हैं, उनको तीन भागों में बाँटा जा सकता है। 8 कर्म वाली, सात कर्म वाली और 6 कर्म वाली अशुद्ध चेतना। कर्मों का हल्कापन कितना है, वह भी एक महत्त्वपूर्ण विषय है। कर्म तो हैं ही, पर एक साधु है, उसके क्षयोपशम भाव चेतना में है या क्षायिक भाव आया है, तो अशुद्धता कम हो गई।

सिद्धों में इस तरह का कोई भेद नहीं, चेतना अशुद्ध यानी उसमें चार कषाय हैं। इन चार कषायों में एक है—माया, जो यथार्थ को आवृत्त करने में प्रयास कर लेता है। लोहावरण करने का प्रयास कर लेता है। आदमी छलना, माया, वंचना कर लेता है। यह माया चेतना की अशुद्धता की प्रतीक है। आगे और ज्यादा चेतना को अशुद्ध बनाने वाली बन सकती है।

सरलता और सच्चाई का गहरा संबंध है। सरलता नहीं है, तो फिर



सच्चाई में तेजस्विता नहीं हो सकती, ऐसा लगता है। माया और मृषा का भी गहरा संबंध है। जो बात प्रकट करे उसमें मन में जो है, उसमें भिन्न नहीं होनी चाहिए। मन में कुछ, बात में कुछ तो फिर वो यथार्थ सामने न आए।

कई बार आदमी शब्दों के स्तर पर तो यथार्थ बोलता है, पर उस यथार्थ में प्राणवत्ता नहीं होती। उस यथार्थ के भीतर भी छल होता है। यह यथार्थ शोभित नहीं होता। जिसके भीतर छलना है, वह अयथार्थता है, यह एक प्रसंग से समझाया कि शब्दों में तो अयथार्थता नहीं है, पर भीतर अयथार्थता है।

माया से यथार्थ को ढकने का प्रयास न हो। साधु को तो सरलता रखनी ही चाहिए। गलती को तोड़-मरोड़कर बताने का प्रयास न हो। गुरु के सामने शिष्य को ज्यादा होशियारी नहीं छॉटनी चाहिए। छलना से युक्त होशियारी अध्यात्म की

दृष्टि से व व्यवहार की दृष्टि से भी कहीं-कहीं नुकसानदेह हो सकती है। सरलता है तो सच्चाई अच्छी तरह टिक सकती है। सरलता एक तरह से सत्य रूपी महाराज के विराजने के लिए सिंहासन है।

सरलता के आसन पर देवी सच्चाई विराजमान हो सकती है। सच्चाई के सामने कठिनाइयाँ तो आ सकती हैं, परेशानियाँ, समस्याएँ आ सकती हैं, परंतु भविष्य सच्चाई का उज्ज्वल होता है। झूठ-कपट है, वर्तमान में राहत मिलने की संभावना हो जाए, भविष्य उसका अंधकारमय होता है।

वर्तमान तो छोटा सा है। भविष्य का काल लंबा है। भविष्य को भी उज्ज्वल रखने पर ध्यान देना चाहिए। बात को मान लो यहाँ छिपा भी लोगों पर आगे छिपाना मुश्किल है। एक दोहा है—

जो छल-कपट, माया-वंचना करता है, दोषों को छिपा लेता है, आलोचना नहीं करता, उसका क्या हाल होगा। देवगति-देवगति में भी अंतर होता है। चेतना निर्मल नहीं रहती है। साधु को तो सरलता रखनी ही चाहिए।

गृहस्थ जो है, सरलता तो सबके लिए काम की है। आप छल-कपट धोखाधड़ी करेंगे तो आपका विश्वास चला जाएगा तो अपने कौन व्यावसायिक संबंध रखेगा। ईमानदारी-सच्चाई का लंबे काल तक अच्छा व्यावहारिक परिणाम आ सकता है। साथ में आत्मा के कल्याण की बात भी है।

आदमी को विश्वस्तता रखनी चाहिए। साफ-सुथरा काम, पारदर्शिता रहे। हर क्षेत्र में स्पष्टता रहे। सरलता-सच्चाई के अनेक विषय हैं। हम चेतना पर ध्यान दें कि चेतना की शुद्धता को बढ़ाने के लिए आदमी को सरलता-सच्चाई की शरण में रहना



भूल छिपाना पाप है,
करो निवेदन साफ।
यहाँ बचोगे पर नहीं,
आगे होगी माफ।।

आगे नानी-दादी का घर नहीं है।
एक-एक चीज का फल भोगना होता है।

चाहिए।

आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ राज्यसभा सदस्य एवं मध्यप्रदेश के कद्दावर नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया पहुँचे। उन्होंने पूज्यप्रवर के दर्शन कर आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा को अद्वितीय बताया।

अपनी इच्छाओं को जीतने वाला सुखी रह सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

मल्हारगढ़, 3 जुलाई, 2021

जन-जन के तारक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग 90 किमी का विहार कर मल्हारगढ़ पधारे। ज्योतिचरण ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि तीन शब्द हैं—अनिच्छ, अल्पेच्छ और महेच्छ। अनिच्छ वह होता है, जिसके कोई इच्छा, लालसा, आकांक्षा, कामना नहीं होती। इच्छा रहित वह अनिच्छ होता है।

अल्पेच्छ वह होता है, जिसके इच्छाएँ अल्प-सीमित होती हैं। महेच्छ वह होता है, जिसके बहुत ज्यादा इच्छा, लालसा, कामना होती है। इच्छा ज्यादा होती है, तो मानना चाहिए वह दुःख का कारण होती है। जितना आदमी संतोषी, आत्मतोषी रहता है, सुखी रहता है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)



केवल कल्पना से नहीं पुरुषार्थ से सिद्धि प्राप्त होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

बही, 2 जुलाई, 2021

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, समयज्ञ, आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग 92 किमी का विहार कर बही ग्राम में पधारे। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि क्षमा साधना का भी महत्त्वपूर्ण तत्त्व है और असल व्यवहार का भी वह महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। सहन कर लेना भी कईयों के लिए बड़ा कठिन होता है।

सहिष्णुता को तीन संदर्भों में देखा जा सकता है—शारीरिक सहिष्णुता, वाचिक सहिष्णुता और मानसिक सहिष्णुता, शरीर संबंधी कठिनाई को सहज कर लेना शारीरिक, सहिष्णुता है। जिस आदमी में सहन करने का मादा-सामर्थ्य होता है, उसका कार्य कुछ निर्बाध कर सकता है। विचलित होना दुर्बलता है।



की जा सकती है। शरीर में जब तक चाहिए। गुरुदेव तुलसी ने कोलकाता व दक्षिण भारत की यात्रा की थी। ये शरीर

की सक्षमता थी जो यात्रा कर ली। बड़े काम सक्षमता सापेक्ष होते हैं। भाग्य का योग हो तभी शरीर सक्षम रह सकता है।

हमारे जीवन में भाग्य की भी एक भूमिका होती है। काल, स्वभाव, कर्म, पुरुषार्थ, नियति। आचार्य तुलसी 22 वर्ष की आयु में ही तेरापंथ के आचार्य बन गए थे, तो यह उनके भाग्य ने साथ दिया है। बिना भाग्य के तेरापंथ धर्मसंघ का सम्राट बन जाना मुश्किल लगता है। व्यक्तिगत रूप में भी भाग्यवाद पर विश्वास करने वाला हूँ।

भाग्यवाद मुझे यथार्थ से युक्त तत्त्व लगता है। भाग्यवाद को तो मानता हूँ, पर भाग्य भरोसे बैठने को अच्छा नहीं मानता हूँ। पुरुषार्थ को छोड़ो मत। पुरुषार्थ और भाग्य का संबंध भी हो सकता है। आदमी को पुरुषार्थ करना चाहिए।

दो शब्द हैं, ज्ञातव्य और कर्तव्य। ज्ञातव्य यानी जानने योग्य। कर्तव्य क्या है, करने योग्य। भाग्यवाद ज्ञातव्य है, पुरुषार्थवाद कर्तव्य है। करते-करते कुछ मिल सकता है।

अभ्यास से सिद्धि प्राप्त हो सकती है। केवल कल्पना से नहीं, पुरुषार्थ-अभ्यास करने से कार्य हो सकते हैं। 'श्रम करो, सफल बनो।' बाल वय में विद्या का अर्जन नहीं किया तो कमी रह जाती है। अग्रणी से ग्रहण करने का अभ्यास करे। पुरुषार्थ से जो मिलता है, वो किसी दृष्टि से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।

जो चीज सुख से मिल गई है, वो दुःख आने पर जा सकती है। परिचय से प्राप्त करो। अनेक ग्रंथों से कर्मवाद की बात जानी जा सकती है। करने की जहाँ

बात है, वहाँ भाग भरोसे नहीं पुरुषार्थ करो। करते रहोगे तो कहीं पहुँच सकोगे।

अध्ययन करना है, तो उसके पीछे पड़ो। किसी भी भाषा की आत्मा उसकी व्याकरण होती है। व्याकरण का ज्ञान नहीं है, तो भाषा पर अधिकार होना मुश्किल है। भाषा का प्राणतत्त्व व्याकरण होता है।

व्याकरण का ज्ञान नहीं है, तो वह आदमी भाषा जगत में अंधा है। व्याकरण तो अलूनी शिला है। व्याकरण सीखने के लिए समर्पण करना पड़ता है। धोको, रटो, कंठस्थ करो। चितारणा करो, पूछो-जिज्ञासा करो। जिज्ञासा ज्ञान को पैदा करने वाली होती है। लिखना करो तो व्याकरण सीखा जा सकती है।

सहिष्णुता की बात है, तो परिश्रम करो। शारीरिक सहिष्णुता के साथ वाचिक सहिष्णुता भी रहे। कोई कह दे, अपमान कर दे, सहन करो। मानसिक सहिष्णुता यानी जीवन में कई स्थितियाँ आ सकती हैं। मन में कष्ट आए, शांति से रहे।

हुवा और होगा कि जो, वह सब भला नितांत। परम शांति के हेतु है, ये दो चिंतन कांत।

जो स्थिति है, संतोष में रहो। दूसरों को सुखी देखकर दुःखी मत बनो। दूसरों को दुःखी देखकर सुखी मत बनो। क्षमा-सहिष्णुता है, ये हमारे जीवन में रहता है तो जीवन शांतिमय रह सकता है। आत्मा के कल्याण की दृष्टि से भी अच्छी बात हो सकती है। पूज्यप्रवर ने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई।

समणी विनीतप्रज्ञा जी और समणी जगतप्रज्ञा जी ने आज लगभग 99 माह के अंतराल के बाद पूज्यप्रवर के दर्शन किए। परम पावन ने आशीर्वाचन रूप में फरमाया कि दोनों समणी लंबे अंतराल के बाद आए हैं। खूब अच्छी साधना हो, विकास हो, समता व मनोबल अच्छा रहे।

समणी विनीतप्रज्ञा जी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की।

भीलवाड़ा चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया व भीलवाड़ा नगर परिषद के चेयरमैन राकेश पाठक पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में उपस्थित होकर अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

♦ इस दुनिया में कोई स्थायी नहीं, सब राही हैं।

— आचार्यश्री महाश्रमण

अपनी इच्छाओं को जीतने वाला सुखी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कामनाओं का अतिक्रमण करो, दुःख अपने आप अतिक्रान्त हो जाएगा। दुःख पदार्थों की आसक्ति से, अनुवृद्धि से उत्पन्न होता है। आदमी के पास सोने-चाँदी के पर्वत हैं, पर आदमी लोभी है, लालसावान है, तो वह उतने से भी संतुष्ट नहीं होगा। इच्छा आकाश के समान अनंत है। आकाश का कहीं अंत नहीं, प्रारंभ नहीं। इच्छाओं को बढ़ाएँगे तो और बढ़ती जाएगी।

इच्छा पर ब्रेक लगा दें तो इच्छा कंट्रोल में रह सकती है। अपनी छाया को पीछे करने के लिए दौड़ लगाने की जरूरत नहीं, मोड़ की जरूरत है। मुड़ जाओ, दिशा बदल दो। इसी तरह इच्छाएँ हैं। इच्छाओं का जिसने परिसीमन कर लिया, कंट्रोल कर लिया, लालसा मुक्त हो गया वह आदमी उस संदर्भ में बहुत सुखी रह सकता है।

साधु में न उत्कर्ष का न अपकर्ष का भाव आना चाहिए। आहार मिलता है तो ठीक है, न भी मिलता है तो भी ठीक है। आहार नहीं मिलेगा तो तपस्या की वृद्धि हो जाएगी। मिल गया तो शरीर को पोषण मिल जाएगा। नहीं मिला तो आत्मा को पोषण मिल जाएगा। साधु दोनों स्थितियों में शांत रहे।

नियंत्रण करना है तो विपरीत दिशा में चलना पड़ेगा। निद्रा पर विजय प्राप्त करनी है यदि बहुत सोता है, तो निद्रा पर विजय नहीं मिलेगी। निद्रा को कम करने का प्रयास करो। नींद को उड़ा सकेंगे तो निद्रा विजय प्राप्त कर पाएँगे। खाता हुआ भूख पर विजय प्राप्त कर नहीं सकता। कम खाओगे तो क्षुधा विजय हो जाएगी।

आदमी निद्रा विजय, क्षुधा विजय और आसन विजय कर ले। पदार्थों के प्रति लालसा करते जाओगे तो लोभ कम कैसे होगा। प्रतिकूल प्रहार करो। जिसके प्रति आकर्षण है, उसका त्याग ही कर दो। प्रतिस्त्रोत में चलो। जिसके प्रति आकर्षण है, उसको छोड़ो तो इच्छाओं का परिसीमन होगा। हम विजय की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

कामनाओं से जो मुक्त है, वह आदमी बड़ा सुखी है। कामनामुक्त, लालसामुक्त चेतना होती है, तो कामना विजय की दिशा में आदमी आगे बढ़ सकता है। जैसे-जैसे उत्तम तत्त्व का ज्ञान होता है, वैसे-वैसे पदार्थों के प्रति आकर्षण कम हो जाता है। ज्यों-ज्यों आकर्षण कम होता है, हम उत्तम तत्त्व प्राप्त कर सकते हैं।

दो ध्रुव हैं—पदार्थों के प्रति आकर्षण और उत्तम तत्त्व की प्राप्ति। यह एक दृष्टांत से समझाया कि जिसे चिंता नहीं, दुःख नहीं, कोई कामना नहीं है, वह परमसुखी है। गृहस्थ है, वो देखें कि हमारी कितनी आकांक्षाएँ हैं। कामनाएँ हैं, उतनी दुःख की स्थिति बन गई।

श्रावकों के बारह व्रतों में पाँचवाँ व्रत है—इच्छा परिमाण व्रत। इच्छाओं का परिमाण परिसीमन कर लो तो तुम अल्पेच्छ बन सकते हो। संतोष ऐसा धन है, जिसके सामने और चीजें धूल के समान हैं। एक प्रसंग से समझाया कि जिसके पैरों में जूते हैं, उसके लिए पूरी धरती चमड़े की हो जाएगी। संतोष का जूता जिसने पहन लिया उसको कामना के काँटे नहीं चुभेंगे। आदमी सुखी रह सकता है, कामनाओं पर कंट्रोल करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में उत्कृष्ट हाई स्कूल से अशोक दक, ओमप्रकाश पटवा, अशोक दुगड़, ललित कुमावत, उत्कृष्ट हाई स्कूल के प्राचार्य, उमेश कुमार मोदी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। भीलवाड़ा स्थानकवासी समाज से कंवरलाल सूर्या ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि मल्हारगढ़ में जैन-अजैन लोग रहते हैं। हम लोग सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बात बताते हैं। सभी अच्छा जीवन जीएँ।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आत्मा के कल्याण के लिए त्याग और संयम रखना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

मंदसौर, 9 जुलाई, 2021

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी ध्वल सेना के साथ राजस्थान की ओर अग्रसर हैं। वर्तमान में मंदसौर जिले में यात्रा चल रही है। परम पावन आज प्रातः मंदसौर हैड क्वार्टर पधारे। प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आत्मवाद, कर्मवाद, लोकवाद, क्रियावाद ये दर्शन के प्रमुख सिद्धांत हैं। आत्मा का अस्तित्व त्रेकालिक भी होता है और शाश्वत होता है।

त्रेकालिक तो अशाश्वत किसी अपेक्षा से हो जाए। आदमी का शरीर त्रेकालिक तो है पर अशाश्वत है, विनाशधर्मा है। आत्मा शाश्वत रहती है। हमेशा थी, है और हमेशा रहेगी। कभी उसका नाश नहीं हो सकता। एक आत्मा के असंख्य प्रदेश होते हैं। प्रत्येक आत्मा असंख्य प्रदेशों का पिंड होती है। ये प्रदेश इतने हैं कि आत्मा फैलाव करे तो इस पूरे लोक के 9-9 प्रदेश पर आत्मा का 9-9 प्रदेश स्थित हो जाए।

जैन तत्त्व विद्या में जो केवली समृद्धात की बात आती है। यह आठ समय कालों की एक प्रक्रिया है। उसमें ऐसा समय भी आता है, जब आत्मा पूरे लोक में फैल जाती है। पूरे लोक में फैलने वाली आत्मा छोटे से शरीर में कैसे समा जाती है। हाथी में जो आत्मा है, कुंथु में भी वो ही आत्मा है। जितना अवकाश मिलता है, उसके हिसाब से आत्मा अपने आपको एडजस्ट कर लेती है।

एडजस्टमेंट की प्रेरणा आत्मा से ली जा सकती है। पारिवारिक जीवन में औचित्य के अनुसार तालमेल करके रहें। जैसी स्थिति-परिस्थिति है, उस अनुसार अपने आपको सामंजस्य कर लें। मन को संतुष्ट रखें। साधु भी सामंजस्य करते ही हैं। सामंजस्य एक-दूसरे के साथ बिठाना भी एक जीवन जीने की कला है। दूसरों के साथ किस तरह सामंजस्य बिठाया जाए। समझदारी हो, सहिष्णुता हो।

जैसे दीपक जल रहा है, उस पर टोपसी लगा दी तो उसका प्रकाश टोपसी में ही सीमित हो जाएगा। टोपसी हटाकर बड़ा टब लगा दिया तो वो प्रकाश पूरे टब में सीमित हो जाएगा। टब को हटाकर कमरे को बंद कर दिया तो प्रकाश पूरे कमरे में फैल जाएगा। उसी स्थिति अनुसार आत्मा को जैसा शरीर मिलता है, आत्मा प्रसरित हो जाती है, फैल जाती है। पूरे लोक में फैलना है, तो पूरे लोक में फैल जाती है। अलोक में नहीं जा सकती। आत्मा के जो असंख्य प्रदेश हैं, वो



अविनाशी है। शरीर का अंग कोई भले कट जाए पर आत्मा के प्रदेश टूटते नहीं हैं। आत्मा अछेद्य है। आत्मा अदाह्य है। आत्मा अक्लेष्य है, आत्मा असोस्य है। ये आत्मा के स्वरूप हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, एक पूरा लोकाकाश और एक जीव इन चारों के प्रदेश संख्या में असंख्य हैं, समान है। एक भी प्रदेश कम-ज्यादा नहीं होता है। चारों तुल्य है, समान है। आत्मा मोक्ष में है या संसार में हो, उसके असंख्य प्रदेश हैं।

आत्मा के असंख्य प्रदेशों में से एक भी प्रदेश कम नहीं होता। अनंतकाल बाद भी एक प्रदेश ज्यादा नहीं होता। उतने के उतने रहते हैं। यह आत्मा की यथावत्ता है, शाश्वतता है। जैन दर्शन में यह आत्मवाद का सिद्धांत है।

आत्मा आठ बताई गई हैं, पर आत्मा अलग-अलग नहीं है, द्रव्य आत्मा तो एक ही है, सात भाव आत्माएँ हैं। वे द्रव्य आत्मा की अवस्थाएँ हैं। जैन दर्शन का यह सिद्धांत भी है कि आत्मा अलग है, शरीर अलग है। मैं कौन हूँ? मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ। आत्मा स्थायी है, ये स्थूल शरीर अस्थायी है।

प्रश्न है, स्थायी के लिए हम क्या करें? अस्थायी तो कभी नष्ट होने वाला है। पर उसका भी ध्यान देना होता है। परंतु जो स्थायी है, आगे जाने वाली है, उस पर भी तो ध्यान दें। आत्मा के साथ क्या जाएगा। न गृहस्थों के साथ धन जाएगा, न साधु के साथ चारित्र जाएगा। एक दृष्टांत से समझाया कि भले साधु के चारित्र साथ में न जाएँ पर चारित्र की साधना से जो उज्वलता-निर्जरा की कमाई होगी वो साथ जाने वाली है। निर्जरा-निर्मलता के लिए साधुपन पालते हैं। तपस्या-साधना करते हैं।

तपोगुण प्रधान है, ऋजुमती है, शांति और संयम में रत है, परिषहों को जीतने वाला है, उसको सुगति सुलभ है। स्वर्ग मिलना छोटी बात है। आत्मा की निर्मलता

होना बड़ी बात है। साधुपन एक दुकान है, इससे हम कमाई करते हैं। आत्मा और शरीर में भिन्नता है, यह भेद-विज्ञान है।

गृहस्थों के लिए चिन्त्य है, विचारणीय है कि शरीर के लिए कितना क्या करते हैं और आत्मा के लिए कितना-क्या करते हैं? आत्मा आगे जाने वाली है, उसके लिए क्या किया जा रहा है। आगे का टिफिन तैयार हो रहा है या नहीं। धर्म और संयम-तप का टिफिन हो। त्याग धर्म का टिफिन तैयार है, तो फिर मृत्यु कभी भी आ जाए, वह साथ जाने वाला है।

जो पाप ज्यादा करता है, उसको पश्चात्ताप हो सकता है। मौत सामने है, अब मेरा क्या होगा। इस भौतिक जगत में छोटी उम्र में घर-परिवार त्यागकर धर्मसंघ में आ जाना कितनी बड़ी बात है। आत्मा को शाश्वत बताया गया है, हम उसके हित का विशेष ध्यान रखें। शरीर अशाश्वत है, पर ध्यान रखना अपेक्षित है, पर आत्मा को उपेक्षित न कर दें, यह जागरूकता रखनी वांछनीय है।

आज मंदसौर आए हैं। अच्छा कस्बा है। जैन समाज भी बहुत है। मंदसौर यानी हिंसारूपी सौर मंद रहे। खूब अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता की भावना रहे। मंगलकामना।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में आयुषी मास, अर्हम ग्रुप, शैलेंद्र भंडारी, खुशबू पामेचा, सुहानी मेहता, कन्या मंडल, ध्रुव जैन, स्थानीय महिला मंडल, विनोद मेहता, सर्व जैन समाज प्रतिनिधि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

राग-द्वेष से बचने का प्रयास करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

फतेहगढ़, 30 जून, 2021

नैतिकता, नशामुक्ति एवं सद्भावना के प्रबल प्रेरणा प्रदायक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः 99 किमी का विहार कर फतेहगढ़ पधारे। मंगल देशना देते हुए परम पावन ने फरमाया कि संवाद-संवाद में कई अच्छी ज्ञान की बातें भी प्राप्त हो जाती हैं।

शास्त्र में संवाद के दौरान बताया गया कि प्रगाढ़ राग-द्वेष और स्नेह ये भयंकर पाश होते हैं। आदमी को पाश में फँसने से बचने का प्रयास करना चाहिए। राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। जितना भी पाप-कर्म लगता है, उसका जिम्मेवार मोह कर्म होता है। राग-द्वेष मोह के ही दो विभाग हो जाते हैं।

जिस आत्मा में राग-द्वेष नहीं, उसके पाप-कर्म का बंध हो ही नहीं सकता। अवीतराग प्राणी है, उसके भीतर यह राग-द्वेष की अग्नि प्रज्वलित रहती है आदमी के शांत अवस्था में भी भीतर गुस्सा तो है, कोई गालियाँ देने लगा तो वह गुस्सा प्रकट हो गया।

एक अंश में ग्यारहवें गुणस्थान की भी यही दशा है। उपशांत मोह युगस्थान। वहाँ पर आदमी की स्थिति वीतराग की है, पर वहाँ भी भीतर में कषायग्नि, मोहाग्नि है। अंगार के ऊपर सघन राख है। ऊपर आग नहीं है, पर राख हटाते ही आग से हाथ जल सकता है। यह उपशम भाव एक प्रकार से राख के समान है।

भीतर में अग्रगट रूप में कषाय है। निमित्त साधन मिलते ही प्रगट हो जाता है। आग को चलित किया जाए तो वह प्रगट हो जाती है। सर्प बैठा है, छेड़ो तो फण उठा सकता है। बालक में तेजस्विता है, उन्हें कोई निमित्त मिल जाए तो तेजस्विता प्रगट हो सकती है। जीत मुनि में क्षमता थी, मुनि हेमराज जी का योग मिला, कितना ज्ञान विकसित हो गया। बिंदु से सिंधु जैसा मुनि हेमराज जी ने बना दिया।

निमित्त भी आदमी के विकास में सहयोगी बन जाता है। अच्छे लोगों का संपर्क मिलता है तो भीतर में जो उपादान है, उसको प्रेरणा मिल जाती है और वह प्रगट हो जाता है। इसी प्रकार हमारे कषाय हैं। वे निमित्त मिलने से उभार को प्राप्त हो जाते हैं। हमारी साधना ये होनी चाहिए कि निमित्त आने पर भी हमारे कषाय प्रज्वलित न हों।

विकार का निमित्त मिलने पर भी जिनके चित्त विकसित नहीं होते हैं, वे धीर-पुरुष हो जाते हैं। तीन शब्द हैं—अशक्ति, शक्ति और महाशक्ति। एक आदमी के मन में गुस्सा है, पर मन में कमजोरी है, वह बोल नहीं पाता है, वह उस आदमी की अशक्ति है। उसमें बोलने की क्षमता नहीं है।

एक आदमी है, किसी ने अपमान किया, बोलने की हिम्मत भी है, वो दो की चार सुना देता है, यह उसमें शक्ति है। महाशक्तिमान वह है, जिसमें क्षमता है, दो की चार सुना सकता है, तो भी शांत है, कुछ नहीं बोलता है। आदमी को अशक्तिमान तो नहीं होना चाहिए। आदर्श की दृष्टि से शक्ति होने पर भी हिंसा में नहीं जाता वो फिर महाशक्तिवाला व्यक्ति हो जाता है। साधु का सहन करना धर्म है।

शक्ति का विकसित होना अच्छा है, पर उसका दुरुपयोग न हो। असहिष्णुता है, तब गुस्सा आ रहा है। अशक्ति भी न हो और महाशक्ति बनने की भावना रखनी चाहिए।

चंडकौशिक सर्प था वो चंड से अचंड हो गया। साधना की दृष्टि से प्रचंड हो गया। शक्ति तो होनी चाहिए, पर उसका उपयोग अच्छा हो। गुस्सा द्वेष का अंग है। अहंकार भी द्वेष है। माया और लोभ राग के अंग हैं। साधना हमारी ऐसी हो कि अनुकूलता में राग में नहीं जाना, प्रतिकूलता में द्वेष में नहीं जाना, मध्यस्थ रहना।

परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी के जीवन को देखें। अनुकूलताएँ-प्रतिकूलताएँ दोनों ही उनके जीवन में आईं। सम्मान भी मिले और विरोध भी हुआ। मानसिक संतुलन में रहे। जन्म तो बच्चे ही लेते हैं, पर बच्चे बहुत अच्छे बन सकते हैं। बड़े आदमी कहलाने के योग्य बन सकते हैं। जीवन में गुणों का विकास हो।

तीव्र राग-द्वेष और स्नेह को पाश कहा गया है। हम पाशों से बचने की सावधानी रखें और विकास में संलग्न रहने का प्रयास करें, यह काम्य है।

आचार्यश्री तुलसी का २५वाँ निर्वाण दिवस

बोलांगीर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य गणाधिपति गुरुदवश्री तुलसी का २५वाँ निर्वाण दिवस गुणोत्कीर्तन समारोह के रूप में तेरापंथ भवन, बोलांगीर में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलांगीर विधायक नरसिंह मिश्रा के साथ ओड़िशा प्रांतीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मुकेश कुमार जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही।



पीलीबंगा

अध्यात्म जगत के उज्वलतम नक्षत्र तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशस्ता आचार्यश्री तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस पर साध्वी प्रतिभाश्री जी के सान्निध्य में दफ्तरी निवास पर कार्यक्रम आयोजित हुआ।

कार्यक्रम प्रीति डाकलिया द्वारा मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। पुष्पा नाहटा, तेयुप मंत्री सतीश पुगलिया, भव्या दफ्तरी, सुशीला नाहटा ने विचारों तथा राजकुमार छाजेड़ तथा महिला मंडल ने सामुहिक रूप से गीतिका के माध्यम से आचार्य तुलसी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए।

साध्वी प्रतिभाश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी भारतीय संस्कृति में बीसवीं सदी के एक ज्योतिर्मय नक्षत्र महामनव के रूप में उभरे जिन्होंने अपने ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी व्यक्तित्व के द्वारा पूरे विश्व में अध्यात्म क्रांति की। धर्म की नई पहचान दी।

उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ की उर्वर धरती पर अनेक उपलब्धियों के माइलस्टोन खड़े किए, जो युगो-युगों तक मानव जाति का दर्शन करेंगे। आचार्य तुलसी ने जो भी सपने देखे वे सदा उन्हें साकार करते, चाहे कितना ही पुरुषार्थ क्यों न करना पड़े। साध्वी समाज को श्रुत संपन्न बनाना उनका पहला सपना था। अणुव्रत का अवदान मूर्छित मानवता को संजीवनी प्रदान करने वाला वरदान था। उनके जीवन की दिनचर्या पूर्ण संयमित थी।

साध्वीश्री जी ने सभी को जप-तप के माध्यम से आचार्य तुलसी को श्रद्धास्पद श्रद्धांजलि देने की प्रेरणा दी। साध्वी सोमश्री जी, साध्वी विकासप्रभा जी, साध्वी पुलकितप्रभा जी ने भी अपने विचारों व कविता के माध्यम से भावांजलि दी।

विजयनगर

तेरापंथी सभा के तत्वावधान में बरड़िया निवास पर साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने गणाधिपति पूज्यप्रवर आचार्यश्री तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस पर उनकी विशेषताओं का उल्लेख किया। साध्वीश्री

आचार्य तुलसी का 25वें महाप्रयाण दिवस के आयोजन

बीसवीं सदी के पथदर्शक थे आचार्य तुलसी

जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी संपूर्ण मानव जाति के लिए मसीहा थे, उनके अनेक आयाम विश्व व्यापक हैं। हर व्यक्ति को सही दिशा और सही आत्मबोध करवाते थे। आचार्य तुलसी ने सामाजिक कुरीतियों पर कटाक्ष करते हुए सकारात्मक वातावरण निर्मित किए। नारी उत्थान, प्रेक्षाध्यान, आगम-मंथन जैसे अनेक नवचिंतन जनमानस को दिए।

इसी संदर्भ में सभा के अध्यक्ष राजेश चावत ने गुरुदेव की विशेषताओं को बताते हुए कहा कि आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के महानायक थे, उनके द्वारा प्रदत्त अणुव्रत आंदोलन जिसने जनमानस को नव चेतना प्रदान की।

इस अवसर पर सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राकेश दुधोड़िया ने अपने स्वरचित कविता प्रस्तुत की। सभा के सहमंत्री प्रकाश गांधी ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावना प्रेषित की। सभी साध्वियों ने सामुहिक गीतिका का संगान किया। महिला मंडल की अध्यक्ष कुसुम डांगी एवं उपाध्यक्ष प्रेम भंसाली ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर सभा के उपाध्यक्ष महेंद्र टेबा व साध्वी धैर्यप्रभा जी के नातिले भी उपस्थित थे। संचालन सुमित्रा बरड़िया ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री मंगल कोचर ने किया।

चंडीगढ़

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशानुसार अणुव्रत समिति, हावड़ा द्वारा आयोजित एक शाम अणुव्रत प्रवर्तक तुलसी के नाम कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम की शुरुआत सामुहिक नवकार महामंत्र के गीत के साथ हुआ। अणुव्रत समिति हावड़ा के संगठन मंत्री सुषमा सिंधी ने गीतिका का संगान किया। अणुव्रत समिति परामर्शक एवं उपासक जम्बरमल दुगड़ ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष मनोज कुमार

सिंधी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और आचार्यश्री तुलसी के अवदानों पर प्रकाश डाला, जिसमें एक अवदान है—अणुव्रत। तेरापंथी महासभा के शिरोमणि राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश गोयल, मुख्य ट्रस्टी भंवरलाल बैद, अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, महामंत्री भीखमचंद सुराणा एवं सगठन संयोजक राकेश मालू ने भजन संध्या कार्यक्रम के लिए मंगलकामना करते हुए गुरुदेव तुलसी के अवदानों पर प्रकाश डाला।

आमंत्रित कलाकार अमित सिंधी-सिरसा, ललित श्यामसुखा-दिल्ली, राहुल बैद-दिल्ली एवं राकेश चिंडालिया ने शानदार प्रस्तुति देकर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया एवं सुधा जैन हिसार ने अपनी आध्यात्मिक प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया।

कार्यक्रम में महासभा से बंगाल प्रभारी तेजकरण बोथरा, दक्षिण हावड़ा तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुशील गिड़िया, अणुविभा से पंकज दुधोड़िया, अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंधी, अणुव्रत समिति, हावड़ा उपाध्यक्ष-प्रथम अजीत बैद, सहमंत्री-प्रथम रेखा मालू, सहमंत्री-द्वितीय दीपक नखत, कोषाध्यक्ष डालम गिड़िया, प्रचार-प्रसार मंत्री राकेश धारीवाल एवं समाज के सभी गणमान्य श्रावकों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में कोलकाता हावड़ा उपनगर की तेरापंथी सभा, तेममं, तेयुप, टीपीएफ व अणुव्रत समिति, कोलकाता का सहयोग रहा। अणुव्रत समिति, हावड़ा के मंत्री राजेश बोहरा ने सभी का आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रमोद घोड़ावत ने किया।

राघवेंद्र कॉलोनी, हैदराबाद

साध्वी काव्यलता जी ने आचार्यश्री तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस पर कहा कि आचार्य तुलसी महावीर परंपरा के

संवाहक थे, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने संघ का चहुँमुखी विकास किया। त्याग, तपस्या, श्रद्धा, समर्पण, सेवा, अनुशासन आदि। आचार्य तुलसी एक महान वक्ता, उच्च कोटि के लेखक, आशु कवि, विलक्षण दार्शनिक, अद्वितीय रचनाकार, मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व के धनी थे।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान इस संघ के विकास का आधार है। पद का विसर्जन कर आचार्य तुलसी ने राष्ट्र, समाज को एक चुनौती दी। वे एक दिव्य भास्कर बन धरती पर आए और अपनी प्रकाश शक्ति से जन-जन को आलोकित किया।

साध्वी ज्योतिषा जी ने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि सदियों के बाद कोई दिव्य पुरुष धरती पर आता है और अपनी रश्मियों से जन-जन में नए आलोक का संचार करता है। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने गीत के माध्यम से कहा कि तुलसी के संदेशों को जीवन में उतारें।

कार्यक्रम का शुभारंभ शिल्पा सुराना, संगीत बरड़िया, पिकी सुराना ने तुलसी के व्यक्तित्व को शब्दचित्र के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए सुमधुर गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश ने वक्तव्य के द्वारा अपनी भावना रखी। महासभा के सलाहकार बाबूलाल सुराणा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, हिमायत नगर सभा के उपाध्यक्ष दिलीप डागा, कार्यकर्ता, विनोद डागा, विजयराज

आंचलिया, तिलोकचंद सिपानी, संगीता बरड़िया आदि ने गुरुदेव तुलसी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित की। विकास सुराणा ने सबके प्रति आभार व्यक्त किया।

डी०बी० कॉलोनी, हैदराबाद

तेरापंथ भवन में आचार्यश्री तुलसी का २५वें महाप्रयाण दिवस श्रद्धाभिव्यक्ति पूर्वक मनाया गया। साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का नाम अधरों पर आते ही एक साथ लाखों सिर श्रद्धा से झुक जाते हैं। हाथों की अंजलि बन जाती है। अंतर मन में भावों की घटा उमड़ आती है। आचार्यश्री का विराट व्यक्तित्व, सक्षम नेतृत्व एवं कुशल कर्तृत्व सबके सब रसपरिपूर्ण थे। उनकी मंगल सन्निधि मन की गाँठें खोल देती थी। उन्होंने अपने कुशल कर्तृत्व से वक्त के साँचे को ही बदल दिया।

साध्वी स्वस्थप्रभा जी ने वक्तव्य एवं साध्वी भावयशा जी ने कविता के द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद, तेयुप मंत्री अतुल डूंगरवाल, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम पारख, अणुव्रत समिति से मनोज भंडारी, ज्ञानशाला संचालिका अंजू बैद, सरला भूतोड़िया, चांद बैद, सपना बैद, गौरव दुगड़, धीरज लुणावत ने वक्तव्य, गीत, कविता के माध्यम से श्रद्धा पुष्प अर्पित किए। मंगलाचरण महिला मंडल ने किया। आभार ज्ञापन लक्ष्मीपत बैद ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सहजयशा जी ने किया। इस अवसर पर महिला मंडल, हैदराबाद द्वारा पॉकेट निर्देशिका का विमोचन किया गया।

स्वस्थ परिवार के निर्माण में नारी की भूमिका

तुसरा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तुसरा जैन भवन में स्वस्थ परिवार के निर्माण में नारी की भूमिका विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला प्रारंभ हुई। कन्या मंडल की सुमधुर गीतिका से मंगलाचरण हुआ। तेममं की अध्यक्ष अंजू जैन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि नारी परिवार की धुरी होती है। परिवार का संपूर्ण अस्तित्व तथा वातावरण गृहिणी पर निर्भर है। मारवाड़ी महिला समिति की ओर से मीरा केडिया ने कहा कि नारी में जो नैसर्गिक गुण है—कोमलता, सहनशीलता, संवेदना, करुणा, ममता वह सबको एक सूत्र में संजोने का काम करती है।

पूजा जैन व अंजू जैन ने नारी के शक्ति के विषय में एक लघु नाटिका प्रस्तुत की। तेरापंथ महिला मंडल की गीतिका ने सभी का मन मोह लिया। मारवाड़ी युवा मंच जागृति शाखा की अध्यक्ष बबली जैन ने कहा सेवा और स्वार्थहीनता का शस्त्र लेकर हम स्वस्थ परिवार की संरचना कर सकते हैं।

मुनिश्री ने कहा कि नारी समाज की कृति है, शक्ति है, नारी जीने का दरिया है और समर्पण की भावना है। नारी में ममता है, क्षमता है, समता है, नारी लक्ष्मी है, सरस्वती है। जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता का निवास होता है। नारी योग्यता संपन्न बनें, अनाग्रह दृष्टिकोण वाली होनी चाहिए। नारी को अहंकार नहीं करना चाहिए, हमेशा विनम्रता रखनी चाहिए। उपस्थिति सराहनीय रही। अंत में तेममं की मंत्री पूजा जैन ने आभार ज्ञापन किया। मंच संचालन हर्षिता जैन ने किया।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

| | |
|--|--------------|
| * अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण | (₹75,00,000) |
| * अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19 | (₹31,00,000) |
| * श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई | (₹13,00,000) |
| * श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनू-इस्तामपुर | (₹11,00,000) |
| * श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद | (₹11,00,000) |
| * श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अहम सेठिया, लुधियाना | (₹5,51,000) |
| * श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा | (₹5,00,000) |
| * श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर | (₹5,00,000) |
| * श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व) | (₹5,00,000) |

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के विविध आयोजन

योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार

गुवाहाटी

तेरापंथी सभा तथा अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष झणकार दुधोड़िया एवं अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी ने कार्यक्रम में पधारे सभी लोगों का स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। तत्पश्चात् प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया गया।

इस अवसर पर तीन प्रशिक्षकों मानमन लोढ़ा, ताराचंद ठोल्या एवं अजय भंसाली ने योगासन, प्राणायाम एवं प्रेक्षाध्यान करवाया, जिसका उपस्थित लोगों ने लाभ लिया एवं इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में सभी संघीय संस्थाओं की भागीदारी रही। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन सभा के मंत्री निर्मल सामसुखा ने किया।

हैदराबाद

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ। अमीचंद दसानी के निवास पर कार्यक्रम का प्रथम चरण प्रारंभ हुआ। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि योग की प्रक्रिया शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का संवर्धन करती है। आज हम योग के कुछ विशेष प्रयोग कर रहे हैं, जो विशिष्ट उपयोगी हैं।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने महाप्राण ध्वनि एवं जप का अनूठा प्रयोग करवाया। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने योग के प्रयोग करवाने से पूर्व कहा कि योग प्रत्येक क्रिया में कौशल का अपर नाम है। साध्वीश्री जी ने ब्रेन एंपावरमेंट, स्मृतिवर्धन, एकाग्रता प्राप्ति, तनावमुक्ति आदि कई छोटे-छोटे मनभावन प्रयोग करवाए। साध्वीश्री गमन योग पूर्वक दसानी निवास से सहयोग कुटीर हनुमानमल नखत के यहाँ पधारीं। एक शांत जुलूस के साथ योग का जीवंत प्रयोग किया गया। सहयोग कुटीर में आभ्यंतर योग का द्वितीय चरण प्रभावक रूप से परिसंपन्न हुआ।

तेरापंथी सभा के मंत्री सुशील संचेती ने योग दिवस की शुभकामनाएँ दी। नवीन दसानी ने अपने निवास पर शैयात्तर लाभ प्रदान करने हेतु सभी साध्वियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की व योग दिवस की मंगलकामनाएँ दी।

योगेश नखत ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। समागत सभी भाई-बहनों को धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में वरिष्ठश्रावक अमीचंद दसानी,

नवीन दसानी, विकास दसानी, हनुमानमल नखत, योगेश नखत, सभा के मंत्री सुशील संचेती, सभा के परामर्शक बाबूलाल सुराणा, ज्ञानशाला की क्षेत्रीय संयोजक सीमा दसानी, ज्ञानशाला विभाग से सुनील बोहरा, अनिल बोहरा आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मैसूर

आदीश्वर वाटिका में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना एक महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। यह दिन भारतीय संस्कृति का गौरवशाली दिन है। यह एक ऐसी विशिष्ट साधना है, जिससे जीवन में अद्भुत आनंद की प्राप्ति होती है। जैन परंपरा में हरिभूपसूरि, आचार्य जैसे योगविद् जैनाचार्य हुए हैं, जिन्होंने योग एवं प्रेक्षाध्यान के रूप में अनेक सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक आयाम दिए हैं। अध्यात्म और शरीर के मध्य कड़ी है-योग। योग के संयोग से शरीर विशिष्ट उपलब्धि प्रदान करता है। योग का अर्थ शरीर का संयम और अनुशासन है। अपनी जीवनशैली में योग को अनिवार्य अंग बनाएँ।

साध्वीश्री जी आगे कहा कि जीवन नदी के प्रवाह की तरह है। जिंदगी के दौर में महापुरुषों द्वारा प्रदत्त सूत्रों एवं मार्गदर्शन को प्राप्त कर हम गतिशील बनें। जिनशासन के नियम, तप और जप से अनशन का संकल्प करें। साध्वी राजुलप्रभा जी ने साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञाजी का जीवन परिचय देते हुए उनके द्वारा देश-विदेशों में की गई प्रभावक यात्राओं का उल्लेख किया। बैंगलोर से समागत वरिष्ठ श्रावक शांतिलाल पितलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। जेटीएन प्रभारी लकी श्रीमाल ने स्वागत किया। साध्वीवृंद द्वारा आदिश्वर स्तुति प्रस्तुत की। इस अवसर पर आदीश्वर वाटिका, पार्श्व वाटिका, सिद्धार्थ नगर परिवारों की उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री विनोद मुनोत ने आभार ज्ञापित किया।

चेन्नई

भारत में योग की परंपरा हजारों साल पुरानी है। योग शब्द का शाब्दिक अर्थ है मिलना या जुड़ना। योग शरीर और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने का अद्भुत विज्ञान है। शरीर एवं मस्तिष्क के संबंधों में संतुलन स्थापित करने में योग की अहं भूमिका रहती है। योग का नियमित अभ्यास शारीरिक और मानसिक अनुशासन भी सिखलाता है। योग स्वयं को समझने और जानने का एक सकारात्मक प्रयास है।

जैनाचार्य प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान पद्धति के द्वारा संपूर्ण योग पद्धति को प्रदान कर राष्ट्र पर बहुत बड़ा उपकार किया है। प्रेक्षाध्यान अपने आपमें

एक वैज्ञानिक पद्धति से जुड़ी साधना है। प्रेक्षाध्यान योग साधना के द्वारा शरीर, मन, श्वास व भाव सबको एक दिशागामी बनाकर जीवनगत समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

आज के दिन यह संकल्प स्वीकार करें कि मैं प्रसन्नता के लिए, शरीर की स्वस्थता के लिए एवं भावों की निर्मलता के लिए प्रतिदिन योगाभ्यास करूँगा। बढ़ती हुई बीमारियों पर अंकुश लगाने की यही रामबाण औषधि है। योग के द्वारा शरीर, मन एवं आत्मा तीनों को शक्ति संपन्न बना सकते हैं।

चंडीगढ़

योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। ये शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने योग दिवस के अवसर पर अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में कहे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृति के युग से हुई है, जिसका मतलब होता है आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन। योग लगभग दस हजार साल से भी अधिक समय से अपनाया जा रहा है। वैदिक संहिताओं के अनुसार तपस्वियों के बारे में प्राचीन काल से ही वेदों में इसका उल्लेख मिलता है। कार्यक्रम में इस दौरान बहुत से श्रावक-श्राविकाओं ने योग किया।

मुनि भूपेंद्र कुमार जी ने कहा कि योग का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाता है, क्योंकि व्यवहार व्यक्ति के तनाव के स्तर पर निर्भर करता है, यह लोगों के मैत्रीपूर्ण चित्तवृत्ति और प्रसन्नचित्त वातावरण का निर्माण करता है। योग हमारी तरंगों को बेहतर बनाता है। योग सदैव अनेकता में एकता को बढ़ाता है। योग शब्द का अर्थ ही जोड़ना है। जीवन और अस्तित्व के विपरीत अंगों को जोड़ता है।

♦ जहाँ अहिंसा होती है, संयम होता है, वहाँ पर्यावरण की सुरक्षा स्वतः हो सकती है। बिजली, पानी का अपव्यय नहीं करना चाहिए।

- आचार्य श्री महाश्रमण



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

केशरीचंद सचिन बैद गंगाशहर निवासी दिल्ली प्रवासी के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा, संस्कारक अनिल सेठिया ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम को संपन्न करवाया गया।

तेयुप की तरफ से अनिल ने आभार ज्ञापन किया। संस्कारक सुशील डागा ने त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।

नूतन गृह प्रवेश

उधना।

राकेश कुमार मेहता दौलतगढ़ निवासी, उधना प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा शाश्वत रेसिडेंसी, उधना में संस्कारक मिश्रीमल गंगावत, विकास कोठारी एवं संजय बोधरा ने विधिवत मंत्रोच्चार के द्वारा संपादित करवाया। संस्कारकों के द्वारा गृह दंपति को विधिवत मंगल प्रवेश कराते हुए मंगल भावना यंत्र की स्थापना करवाई गई।

संस्कार विधि में तेयुप के अध्यक्ष एवं संस्कारक अरुण चंडालिया, मंत्री मनीष दक, सेवा प्रभारी जसवंत डांगी, उपासिका सीमा डांगी एवं पारिवारिक सदस्यों की उपस्थिति रही। पारिवारिक सदस्यों ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी एवं उपस्थित सभी महानुभावों एवं संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

पाणिग्रहण संस्कार

साउथ हावड़ा।

सुजानगढ़ निवासी सुशील भंसाली के सुपुत्र चिरंजीवी गौतम एवं टमकोर निवासी सुरेंद्र जैन छाजेड़ की सुपुत्री सोनिका का पाणिग्रहण संस्कार जैन संस्कार विधि से तेयुप के सहयोग से संपन्न हुआ। अभातेयुप संस्कारकद्वय मनोज सुराणा एवं पवन बैंगानी ने सविधि मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष पवन कुमार बैंगानी ने मंगलभावना यंत्र वर-वधू के हाथों से स्थापना करवाई। साउथ हावड़ा के द्वारा दोनों परिवारों को वैवाहिक प्रमाण-पत्र एवं मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

भंसाली एवं छाजेड़ परिवार ने तेयुप, साउथ हावड़ा एवं संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

सूरत।

रावलिया कलाँ निवासी सूरत प्रवासी स्व० मोहनलाल राठौड़ के सुपुत्र चि० प्रकाश राठौड़ का शुभ विवाह झांसी निवासी वसई प्रवासी रणजीत सिंह ठाकुर की सुपुत्री खुशबू ठाकुर के साथ जैन संस्कार विधि से संपादित करवाया। वरिष्ठ संस्कारक विजयकांत खटेड़ एवं हिम्मत बम्ब ने मंगल मंत्रोच्चार एवं पूर्णविधि का विवेचन करते हुए संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में महासभा कार्यसमिति सदस्य नानालाल राठौड़, रावलिया कलाँ सभाध्यक्ष पूनमचंद बम्ब, मंत्री भगवतीलाल बम्ब, तेयुप अध्यक्ष मुकेश राठौड़ आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्य ने भविष्य में जैन संस्कार विधि को अपनाने का आश्वासन दिया।

तेयुप अध्यक्ष मुकेश राठौड़ ने पारिवारिक संबंधीजनों का आभार व्यक्त किया एवं मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नामकरण संस्कार

तिरुपुर।

डीडवाना निवासी, तिरुपुर प्रवासी प्रमोद कुमार सिंधवी के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के उच्चारण से किया गया। मंगलाचरण की प्रस्तुति परिवार की महिलाओं द्वारा की गई। संपूर्ण मंत्रोच्चार के साथ संस्कारक चेतन बरड़िया, जितेंद्र भंसली एवं प्रेम डकलिया ने विधिवत कार्यक्रम को संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान कर आध्यात्मिक दक्षिणा प्रदान की और जैन संस्कार विधि को अपनाने का आश्वासन दिया। परिषद की ओर से मंत्री संतोष सिंधवी ने पारिवारिक सदस्यों के प्रति आभार ज्ञापन किया। जातक दादीसा सरोज देवी सिंधवी ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया।



आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □



प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

भगवान महावीर के बाद ध्यान की परंपरा

महाप्राण की प्रक्रिया भद्रबाहु संलग्न।
ध्यानस्थिति श्रीपुष्य की रहता निश-दिन मग्न।।
अन्य श्रमण आचार्य भी आत्म-साधना-लीन।
पाते हैं साहित्य में परंपरा प्राचीन।।

प्रश्न : भगवान महावीर ने अपने जीवन में दीर्घ उपवास के साथ ध्यान-साधना को भी विशेष महत्त्व दिया है। उनके जीवन-प्रसंग इस तथ्य के साक्ष्य हैं। पर उनके बाद ध्यान-परंपरा की क्या स्थिति रही? क्या उत्तरवर्ती आचार्यों ने भी अपनी साधना में ध्यान को स्थान दिया है?

उत्तर : भगवान महावीर के सैकड़ों साधु अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी या केवलज्ञानी थे, उन्होंने ध्यान-साधना के बल पर ही उस स्थिति को उपलब्ध किया था। आगमों में स्थान-स्थान पर वर्णन है—**ज्ञानकोटोवगया**—ध्यान कोष्ठक में प्रविष्ट—यह विशेषण ध्यान की महत्त्वपूर्ण परंपरा का सूचक है। ध्यान केवल ज्ञान की उपलब्धि में अनिवार्य तत्त्व है। शुक्ल-ध्यान की साधना किए बिना कोई भी साधक केवलज्ञान नहीं पा सकता, वीतराग नहीं बन सकता। अवधिज्ञान और मनःपर्यवज्ञान भी ध्यान-साधना की परिणतियाँ हैं। चौदह पूर्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी ध्यान की विशिष्ट भूमिका से गुजरना जरूरी है। जो साधक महाप्राण ध्यान की साधना कर लेता है, वह अंतर्मुहूर्त में चौदह पूर्वों का पुनरावर्तन करने की क्षमता अर्जित कर लेता है। इस संदर्भ में आचार्य भद्रबाहु का नाम उल्लेखनीय है।

आचार्य भद्रबाहु भगवान महावीर के आठवें पट्टधर थे। वे ध्यान और श्रुत की परंपरा के समानांतर पोषक थे। श्रुतकेवली की परंपरा में उनका स्थान पाँचवाँ था। भद्रबाहु का जन्म वीर निर्वाण की प्रथम शताब्दी में हुआ। वीर निर्वाण की दूसरी शताब्दी में वे आचार्य संभूतविजय के बाद आचार्य बने। आचार्य बनकर वे नेपाल गए। वहाँ उन्होंने शांत-एकांत पहाड़ियों में महाप्राण ध्यान की साधना प्रारंभ की।

उस समय जैन मुनियों का विहरण क्षेत्र भयंकर दुष्काल से ग्रसित था। दुष्काल में भिक्षु दुर्लभ हो गई। फलतः अनेक श्रुत-संपन्न मुनि दिवंगत हो गए। आचार्य भद्रबाहु के अतिरिक्त एक भी चतुर्दशपूर्वी मुनि नहीं बचा। श्रुत-परंपरा की अविच्छिन्नता के लिए कुछ मुनियों ने तत्काल नेपाल की ओर प्रस्थान कर दिया। नेपाल पहुँचकर उन्होंने भद्रबाहु से प्रार्थना की, 'श्रमण-संघ ने आपको सादर आमंत्रित किया है, दृष्टिवाद की वाचना के लिए। आप वहाँ पधारें और श्रमण-संघ पर अनुग्रह कर उसे अपनी ज्ञानराशि से लाभान्वित करें। आचार्य भद्रबाहु ने संघ का आवेदन सुना, पर स्वीकार नहीं किया। वे अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य साधना को बना चुके थे। उन्होंने अपने विशिष्ट ज्ञान के दर्पण में अपने आयुष्य की अल्पता का प्रतिबिंब देखा और अन्य सब प्रवृत्तियों को छोड़कर आत्म-केंद्रित हो गए। उन्होंने अपने जीवन को महाप्राण-ध्यान की साधना में ही समर्पित कर दिया। इस बात से श्रमण-संघ नाराज हुआ। उसके द्वारा बाध्यता उपस्थित कर देने पर उन्होंने कुछ शर्तों के साथ चौदह पूर्वों की वाचना देने की सहमति अवश्य दी, किंतु अपने ध्यान के क्रम को नहीं तोड़ा।

भगवान महावीर की उत्तरकालीन परंपरा के ध्यान-साधकों में दूसरा महत्त्वपूर्ण नाम है—दुर्बलिका पुष्यमित्र का। दुर्बलिका पुष्यमित्र वीर निर्वाण की छठी शताब्दी में जन्में और सातवीं शताब्दी में दिवंगत हुए। वे युगप्रधान आचार्य आर्यरक्षित के शिष्य थे। स्वाध्याय और ध्यान उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। वे चौदह पूर्वों में नौ पूर्वों के ज्ञाता थे। अनवरत स्वाध्याय और ध्यान में संलग्न रहने के कारण उनका शरीर अत्यंत कृश था। एक बार कुछ बौद्ध भिक्षुओं (उपासकों) ने पुष्यमित्र की ध्यान-साधना के संबंध में संदेह व्यक्त किया। उनको प्रतीति कराने के लिए आर्यरक्षित ने पुष्यमित्र को बौद्ध-भिक्षुओं के विहरण-प्रदेश में कुछ समय तक रहने की अनुज्ञा दी। वहाँ उनकी व्यवस्थित ध्यान-साधना को देखकर बौद्ध-भिक्षुओं और उपासकों को अपनी जिज्ञासा का समाधान मिल गया। दुर्बलिका पुष्यमित्र अपने जीवन के आखिरी क्षणों तक ध्यान के विशेष प्रयोग करते रहें।

भद्रबाहु और दुर्बलिका पुष्यमित्र—इन दो आचार्यों की संक्षिप्त चर्चा मैंने यहाँ की है। इतिहास की प्रामाणिक खोज की जाए तो न जाने कितने ध्यान-साधक आचार्यों और मुनियों का परिचय मिल सकता है, जिन्होंने अपनी साधना में ध्यान को प्रमुखता देकर विच्छिन्न होती हुई जैन साधना पद्धति को उजागर किया।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(9)

यह अमियपगी मंगल वेला
रसभीनी ऋतु नयनाभिराम
निष्ठापंछी के पंख उगे
तुम ज्योतिपुंज तुमको प्रणाम।।

प्राणों में नव पुलकन भर दे
ऐसा अनुपम मधुमास खिला
नित नए चांद तुम उगा सको
इतना असीम आकाश मिला
जीवन का कागज प्रस्तुत है
अब लिखो गीत तुम अविश्राम।।

खुशियों के पल उजले-उजले
मन के सारे संताप हरे
खोया पथ बने स्वयं मंजिल
गूँगे अधरों पर स्वर उभरे
साँसों की किशती सौंप तुम्हें
हो गई सहज मैं पूर्णकाम।।

किरणों की डोर थाम कर मैं
सिंदूरी सुबह उतर आई
तम सागर में जो नाव फंसी
छाई उस पर भी अरुणाई
अब चाह जगे क्यों यात्रा की
जब यहाँ विश्व के सभी धाम।।

विषबुझी हवाएं इस युग की
आशा के स्वप्न झरे सारे
चिंतन के तट पर खामोशी
दूषित कुदरत के गलियारे
क्यों सींचूं तुलसी का पौधा
तुलसी मेरे सम्मुख ललाम।।

जब-जब कर गौर तुम्हें देखा
तुम लगे नित्य रमणीय रूप
नभ में सतरंगे इंद्रधनुष
प्राणों पर उतरी दिव्य धूप
निष्कामभाव से बांट रहे
पाथेय सुधामय सुधाधाम!

जो लगे तुम्हारी अर्चा में
जीवन के पल वे सफल सभी
लो नमन अजनमे भावों का
बासी होंगे जो नहीं कभी
इस अर्द्धसदी के उत्सव पर
युग करता वर्धापन प्रकाम।।

छंदों की नई जोत रचकर
अभिषेक तुम्हारा आज करूं
अल्पना उमंगों से उमगी
अपनी किस्मत पर नाज करूं
क्यों पूजूं अनदेखा ईश्वर
जब खड़े सामने स्वयं राम।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

क्रिया-अक्रियावाद

(५) निःशीलाः पापिकां वृत्तिं, कल्पयन्तः प्रवंचनाः।
उत्कोचना विमर्यादा, मिथ्यादंडं प्रयुञ्जते।।

वे शील रहित होते हैं, पापपूर्ण आजीविका करते हैं, दूसरों को ठगते हैं, रिश्वत लेते हैं, मर्यादा-विहीन होते हैं और मिथ्या-दंड का प्रयोग करते हैं-अनावश्यक हिंसा करते हैं।

(६) क्रोधं मानञ्च मायाञ्च, लोभञ्च कलहं तथा।
अभ्याख्यानञ्च पैशुन्यं, श्रयन्ते मोहसंवृत्ताः।।

वे मोह से आच्छन्न होने के कारण क्रोध, मान, माया, लोभ, कलह, अभ्याख्यान-दोषारोपण और चुगली का आश्रय लेते हैं।

(७) गर्भान्ते गर्भमायान्ति, लभन्ते जन्म जन्मनः।
मृत्योः मृत्युञ्च गच्छन्ति, दुःखाद् दुःखं व्रजन्ति च।।

वे गर्भ के बाद गर्भ, जन्म के बाद जन्म, मृत्यु के बाद मृत्यु और दुःख के बाद दुःख को प्राप्त होते हैं।

समस्त मानव जगत् को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-(१) आत्मवादी (आस्तिक), (२) अनात्मवादी (नास्तिक), (३) आत्मगवैषी या आत्मोपलब्धि। आत्मोपलब्धि व्यक्ति के लिए 'आत्मा है' यह मान्यता का विषय नहीं रहता। उसके लिए आत्मानुभव अन्य पदार्थों की भाँति प्रत्यक्ष है। जो आत्म-खोजी हैं वे भी मानकर संतुष्ट नहीं होते। वे उसकी प्राप्ति के लिए कटिबद्ध होते हैं। आत्मा उनके लिए छुई-मुई की तरह कभी प्रत्यक्ष होती है और कभी अप्रत्यक्ष। जलराशि पर पड़ी सेवाल को हटाने पर आकाश की नीलिमा अप्रत्यक्ष नहीं रहती, लेकिन पुनः सेवाल के फैल जाने पर वह गायब हो जाती है। ठीक साधनाशील व्यक्ति के जीवन में यही क्रम चलता है, जब तक सर्वथा विजातीय अणुओं का निर्मूलन नहीं होता। जैसे ही वे हटते हैं, आत्मा का सूर्य अपनी प्रकाश-गोद में उसे आवेष्टित कर लेता है।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' □

मार्ग बोध

ज्ञान मार्ग-

प्रश्न-२६: कौन से ज्ञान का किस दर्शन से संबंध है?

उत्तर : मति ज्ञान चक्षु-अचक्षु दर्शन
श्रुत ज्ञान दर्शन नहीं
अवधि ज्ञान अवधि दर्शन
मनःपर्यव ज्ञान दर्शन नहीं
केवल ज्ञान केवल दर्शन

प्रश्न-३०: श्रुत ज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान के दर्शन क्यों नहीं?

उत्तर : श्रुत ज्ञान वाक्यार्थ विशेष का ग्रहण करता है। मनःपर्यव ज्ञान से मन की अवस्थाओं का बोध होता है। वाक्य व मन की अवस्थाएँ विशेष होती हैं, जबकि दर्शन सामान्य बोध होता है, इसलिए इन दोनों के साथ दर्शन को नहीं लिया गया।

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-१ : सम्यक्त्व का क्या महत्त्व है?

उत्तर : मोक्ष प्राप्ति का प्रथम सोपान है। सम्यक्त्व। जो जीव सम्यक्त्वी नहीं है, उसके ज्ञान नहीं होता। ज्ञान के बिना चारित्र्य का अभाव रहता है। चारित्र्य के अभाव में कर्ममुक्ति नहीं होती। सकर्मा आत्मा का निर्वाण नहीं होता।

प्रश्न-२ : सम्यक्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर : यथार्थ तत्त्व श्रद्धा को सम्यक्त्व कहते हैं। यही सम्यग् दर्शन है। वैसे सामान्य बोध भी दर्शन है, पर यहाँ इसे सम्यक्त्व के रूप में निदर्शित किया गया है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)



□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य प्रभव

आर्य प्रभव क्षत्रियपुत्र थे। उनके पिता का नाम विन्ध्य था। विन्ध्य पर्वत की घाटियों में वी०नि० पूर्व ३० (वि०पू० ५००) में उनका जन्म हुआ। छोटे भाई को राज्याधिकार मिलने से उन्होंने बगावत कर दी। राज्य में लूट-खसोट करने लगे। पाँच सौ चोरों के नेता बन बैठे। जंबू के दहेज की चर्चा सुनकर सेठ ऋषभदत्त के घर में अपने साथियों को लेकर प्रभव पहुँच गए। अवस्थापिनी विद्या से सबको निद्रित करके और तालोदघाटिनी विद्या से तालों को तोड़कर साथियों को धन के गट्टर बाँधने के लिए कहा। साथियों के हाथ-पैर चिपक जाने से प्रभव चौंके। ध्वनि के आधार पर वहाँ पहुँचे, जहाँ जंबू आठों पत्नियों के मध्य अध्यात्म की चर्चा कर रहे थे। जंबू की विरक्ति, अनासक्ति और संवेग रस की अभिव्यक्ति करने वाली वाणी सुनकर प्रभव प्रबुद्ध हो उठे। जंबू से कुछ प्रश्न भी किए। अंत में साथियों के साथ ही जंबू के साथ संयम व्रत स्वीकार किया।

आर्य प्रभव जंबू स्वामी के बाद आचार्य बने। ग्यारह वर्ष तक आचार्य पद पर रहे। पचहत्तर वर्ष का संयम काल था। सर्वायु एक सौ पाँच वर्ष की थी। वी०नि० ७५ (वि०पू० ३६५) में अनशनपूर्वक स्वर्गगामी बने।

आचार्य शय्यंभव

आचार्य शय्यंभव के व्यक्तित्व में असाधारण गुणों का विकास था। तीर्थंकर महावीर के वे चतुर्थ पट्टधर थे। श्रुतधर आचार्यों की परंपरा में उनका द्वितीय क्रम था। आचार्य शय्यंभव का ब्राह्मण संस्कृति से श्रमण संस्कृति में प्रवेश पाने का घटना प्रसंग इतिहास का अत्यंत रोचक पृष्ठ है।

आचार्य शय्यंभव के गुरु आचार्य प्रभव थे। प्रभव प्रथम श्रुतधर आचार्य थे। आचार्य शय्यंभव को प्रभव से जैन धर्म का बोध प्राप्त हुआ। तदनन्तर शय्यंभव ने उनसे मुनि दीक्षा ग्रहण की। आगमश्रुत और पूर्वश्रुत का प्रशिक्षण पाया। प्रभव से पूर्व की गुरु-परंपरा में सर्वज्ञ श्री-संपन्न जंबू और गणधर सुधर्मा हुए।

आचार्य शय्यंभव का जन्म ब्राह्मण परिवार में वी०नि० २६ (वि०पू० ४३४) में हुआ था। उनका गोत्र वत्स था। राजगृह उनकी जन्मभूमि थी।

शय्यंभव गृहस्थ जीवन में अहंकारी विद्वान् थे। वे स्वभाव से प्रचंड क्रोधी और निर्ग्रन्थ धर्म के प्रबल विरोधी भी थे। यज्ञ आदि अनुष्ठानों के आयोजनों में उनकी प्रमुख भूमिका रहती थी। वेद-वेदांग दर्शन संबंधी उनका ज्ञान अगाध था। आचार्य प्रभव को शय्यंभव जैसे महान् याज्ञिक ब्राह्मण की शिष्य के रूप में प्राप्ति विशेष प्रयत्न पूर्वक ही हुई थी।

आचार्य का सबसे बड़ा दायित्व भावी आचार्य का निर्णय करना होता है। इस महत्त्वपूर्ण दायित्व की चिंता सुधर्मा और जंबू को नहीं करनी पड़ी थी। सुधर्मा के सामने जंबू और जंबू के सामने प्रभव जैसे योग्य व्यक्ति थे। आचार्य प्रभव का पदारोहण चोरानवे वर्ष की अवस्था में हुआ था।

उनके जीवन का यह सन्ध्याकाल था। पश्चिम यामिनी में एक बार आचार्य प्रभव ने सोचा-मेरे बाद गणभारवाहक कौन होगा? उन्होंने श्रमण संघ, श्रावक संघ एवं जैन संघ का क्रमशः अवलोकन किया। गणभार को वहन करने योग्य कोई भी व्यक्ति उनके दृष्टिगत नहीं हुआ। उनका ध्यान यज्ञनिष्ठ ब्राह्मण विद्वान् शय्यंभव पर केंद्रित हुआ। वे नेतृत्व-कला में सर्वथा समर्थ प्रतीत हो रहे थे पर उनके सामने जैन-दर्शन की बात करना संकट का संकेत था।

(क्रमशः)



साध्वी करुणाश्री जी के प्रति भावांजलियाँ

अहम्

● साध्वी संवेगश्री ●

तुम कितनी प्यारी थी,
जन मनहारी थी,
छोड़ के चले गए। सतिवर-४

भैक्षव शासन नंदनवन है-२
इस बगियाँ में खिलने वाला हर पौधा चंदन है।
इसकी शीतलता, इसकी कोमलता, तेरे साथी थी।।

जैसा था नाम तेरा, गुण भी था वैसा-२
जीवन तेरा देता हमको रोज नया संदेश।
याद तेरी आती है, स्मृति सरसाती है, पल-पल छिन-छिन में।।

अजब गजब थी तेरी पुनवानी-२
सबके मन को हर लेती थी तेरी मीठी वाणी,
तेरी समता का, हो तेरी ममता का, गौरव गाँ हम।।

मंत्रों की तुम बड़ी विज्ञाता-२
मंगलपाठ सुनाती सुनकर व्यक्ति तेरा बन जाता।
उसकी शक्ति से, मन की भक्ति से, सबको सिद्धि मिली।।

शासन गौरव का अनुपम साया-२
जीवनभर तुमने उसका साथ निभाया।
अब क्यों छोड़ गए, मुखड़ा मोड़ गए, कुछ बतलाओ ना।।

नोखा हमारा बड़ा ही अनोखा-२
सेवा में अपना इसने नाम किया है चोखा।
करते वंदन हैं, हम अभिनंदन हैं।।
बाजी जीत गए।।

अहम्

● साध्वी मर्यादाप्रभा ●

स्नेह मिला मुझको जो इतना भूल कभी क्या उसको पाऊँ।
सेवा का अवसर मन भावन, मैं अपना सौभाग्य सजाऊँ।।

तन में प्रबल वेदना किंतु,
मन में अजब गजब की समता,
हरी भरी रहती मैं हरदम,
पाकर माँ की सी वह ममता,
नहीं थकान का अनुभव किंचित्, दिन हो चाहे रात जगाऊँ।।

भिक्षु प्रगट्या ढाल शुभंकर,
सुना सदा लोगस का जाप,
दाएँ-बाएँ पास तुम्हारे,
किंतु कभी ना आई धाप,
मुस्कान भरी वो मोहक माया, बोलो कैसे फिर से पाऊँ?

शासन गौरव की शुभ सन्निधि,
अपने ही घर सा अहसास,
जीवन के अनमोल सुखद पल,
पूर्ण हुई है मन की आस,
मिले यही वरदान प्रतिपल, प्रगति पथ पर बढ़ती जाऊँ।।

अहम्

● शासनश्री साध्वी यशोमती ●

करुणाश्री जी संयम जीवन स्वीकार्यो वरदायी।
नैय्या पार लगाई।।आ।।

कोमल तन कोमल मन कोमलता कण-कण में भारी।
गुरु की अनुपम करुणा स्यूँ, सहयोग मिल्यो सुखकारी।
शांत सरल जीवन चर्या स्यूँ, सब पर छाप नमाई।।१।।

शासन गौरव राजीमती जी को मिलग्यो हो सायो।
कान मान समता सब स्यूँ, सम्मान अनूठो पायो।
एक स्थान की गरिमा महिमा, तुमने खूब बढ़ाई।।२।।

कर्म वेदनी बार-बार आ, अपनो रूप दिखायो।
समता स्यूँ सब सहन कर्यो, आतम बल रयो सवायो।
मिल्यो सदा अनुकूल योग, आ ही थारी पुण्याई।।३।।

शीघ्र मोक्ष को वरण करै, संयम स्यूँ निर्मल आत्मा।
यशोमती आ करे कामना, आत्मा हो परमात्मा।
शांतवृत्ति साधक री निश्चित, बजै विजय शहनाई।।४।।

अहम्

● साध्वी प्रभातप्रभा ●

धन्य-धन्य हे करुणाश्री जी।
नैया पार लगाई है।
भिक्षु शासन में संयम की अनुपम पौध खिलाई है।।
(अनशन की)

गढ़ सुजान में जन्म लिया था, बोथरा परिकर सुखकर,
चम्पा-सोहनी के आँगन में बनकर आए रत्नाकर।
गुरु तुलसी से पाई दीक्षा, महिमा खूब बढ़ाई है।।

तन की व्याधि बड़ी प्रबल थी, मन था उससे बड़ा प्रबल,
शांति से सब काम करती, मुस्काती रहती हर पल।
व्यवहार कौशल, सहजता से अपनी छाप जमाई है।।

अपनी सौम्य सरलता से हर दिल पर तुमने राज किया,
जन-जन को आध्यात्मिक संस्कारों का सिंचन खूब दिया।
महाश्रमण की शासना में, लक्षित मंजिल पाई है।।

राजुल की तुम बड़ी थी संबल, कान-मान की नानकी,
समता-करुणा की थी जोड़ी, संवेगश्री जी भानजी।
कुसुमप्रभा, पुलकित, मर्यादा, हर प्रभात सुखदाई है।
शासनश्री सुप्रभा जी का मिला योग वरदाई है।।

पत्र व्यवहार का पता

अ०भा० तेरापंथ टाइम्स

अणुव्रत भवन, तृतीय तल,
२१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली-११००२

E-mail : abtyptt@gmail.com

अहम्

● शासनश्री साध्वी सुप्रभा ●

साध्वीश्री करुणाश्री जी अपनी जीवन नैया तारी।
जीवन नैया तारी, पा भैक्षव गण फुलवारी।।

भाग्य सवायो, संयम पायो, कल्पवृक्ष लहरायो।
मस्त सदा अपणी ही धुन में हरक्षण मोद मनायो।
गुरुकृपा से नहीं पार जी, काढ्यो जीवन रो सार जी।
हँसती-खिलती मणगमती आ मोहक मूरत प्यारी जी।।

सहज सरस व्यवहार मधुर हों, शांत धीर सुखदाई।
कार्य कुशलता स्यूँ जन-जन के दिल में छाप जमाई।
नहीं आलस रो कोई काम जी, श्रम ही साची पहचान जी।
अपणापन सगण्टां रे सागै, नहीं कोई थारी म्हारी जी।।

तन में थी असरल वेदना, पर नहीं हिम्मत हारी।
नहीं रोग है म्हारै कोई, समता इचरजकारी।
शासन गौरव सहवस जी, जीवन मे नित मधुमास जी।
सेवाभावी सतियाँ रो सहयोग मिल्यो औ भारी जी।।

ज्योतिचरण प्रभु महाश्रमण रो, शासन ओ वरदाई।
महर नजर साध्वीप्रमुखा री, जागी हृद पुण्याई।
हो आध्यात्मिक उत्थान जी, बस आत्मा रो संधान जी।
करा कामना सिद्ध प्रभु स्यूँ जुड़ जावै इकतारी जी।।

भिक्षु धम्म जागरण

पूर्वाचल-कोलकाता।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्यप्रवर्तक महामना आचार्य भिक्षु की स्तुति में तेयुप अपनी भजन मंडली 'पूर्वाचल स्वर लहरी' के साथ प्रत्येक माह की सुदी तेरस को भजन संध्या का आयोजन करती है। इसी क्रम में साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में सभा भवन में धम्म जागरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की आयोजना में साथ मिला पूर्वाचल सभा, सॉल्टलेक सभा व पूर्वाचल महिला मंडल का, जिससे इस भजन संध्या में चार चांद लग गए।

नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। स्वर लहरी के गायक संजय वरमेचा, हेमंत वैद, राजीव खटेड, धीरज मालू, नवीन दुगड़, पूर्वाचल सभा से बालचंद दुगड़ व पूर्वाचल महिला मंडल से खुशबू श्यामसुखा, प्रियंका वैद, विनीता वरमेचा, सुषमा बैंगानी, गुप आवृत्ति सहित कुल १२ प्रस्तुतकर्ताओं ने महामना भिक्षु को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

साध्वी स्वर्णरेखा जी ने भी अपनी भावांजलि एक गीतिका के माध्यम से दी। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के सहमंत्री धीरज मालू ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक थे उमरावमल प्रमोद नरेंद्र छाजेड़ परिवार, रामगढ़ शेखावटी-कोलकाता।

सामुहिक सामायिक साधना

जीन्द।

तेरापंथ सभा भवन में तेयुप द्वारा सामुहिक सामायिक साधना कार्यशाला का आयोजन किया गया। मंत्र साधना तेयुप के मंत्री कुणाल मित्तल ने करवाई, प्रेक्षाध्यान साधना सभा मंत्री नारायण सिंह रोहिल्या ने करवाई। आशु जैन अध्यक्ष तेयुप ने आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर रितेश जैन, राजेश जैन, संदीप जैन, डॉ० सुरेश जैन, डॉ० अनिल जैन, मीना जैन, संतोष जैन आदि उपस्थित रहे।

साध्वी करुणाश्री जी के प्रति भावांजलियाँ

शासनश्री साध्वी करुणाश्री जी के प्रति सहवर्ती साध्वियों (रत्नाधिक) के उद्गार

- शासनश्री साध्वी कानकुमारी जी और साध्वी मानकुमारी जी के प्रति जितना आदर और सम्मान का भाव उनके मन में पहले दिन था उतना ही अंतिम दिन तक बरकरार रहा। साध्वी कानकुमारी जी ने बताया-उनकी समता गजब की थी, क्षमता भी गजब थी। उन्होंने सबका मन जीत लिया।
- शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के शब्दों में-
 - (१) मैं कोई भी नया कार्य, चिंतन योग्य प्रसंग तथा आचार्यवर तक निवेदनीय मैटर भी उन्हें सुनाए बिना नहीं देती।
 - (२) लोगों को संभालने की उनकी कला बेजोड़ थी।
 - (३) मैं रात ८-९ के बीच अंदर चली जाती, वे बैठे रहते। वो कोई होता तो उनसे धर्म चर्चा करती, उनका सुख-दुःख सुनती। नहीं होता तो अपना जप करती रहती।
 - (४) संघीय तथा आचार्यों के समाचार सुनने की उनमें अजब उत्सुकता थी। मैं कहती पहले उनको सुना दो मुझे बाद में बता देना।
 - (५) यद्यपि गुरुदेव ने उन्हें मुझे संभाला था पर मैंने उनको नहीं संभाला बल्कि उन्होंने मुझे संभाला।
 - (६) मैं अपना सौभाग्य मानती हूँ कि ऐसी पवित्र साध्वी, पुरुषार्थी साध्वी, पुण्यवान साध्वी, धर्म प्रचारिका साध्वी समय नियोजिका साध्वी, भीतर में रहने वाली साध्वी गुरुदेवश्री तुलसी ने मुझे दिलाई-ऊर्जावान साध्वी थी, इसीलिए तीनों आचार्यों की कृपा उन्हें प्राप्त हुई। (गुरुदेव तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी और आचार्यश्री महाश्रमण जी) आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी सन् २००८ में अणुविभा, जयपुर में विराज रहे थे। आचार्य तुलसी की तीज का दिन। सब साध्वियाँ उपवास पचख रही थीं। आचार्यश्री ने करुणाश्री जी से फरमाया-क्या तुमसे और हमसे गुरुदेव प्रसन्न नहीं होंगे, क्योंकि हम तो उपवास नहीं करते। कोई बात नहीं हम दोनों जाप करके गुरुदेव को प्रसन्न करेंगे।
 - (७) इनके साथ रहकर मैं भी धन्य हो गई। पाँचवें आरे में वेदना में इतनी समता रखने वाली साध्वी के साथ मैं रही।
 - (८) उनकी मंत्र-श्रद्धा भी अटूट थी। कई प्रकार के जप प्रयोग करती रहती। नवकार मंत्र की ५ माला, ॐ भिक्षु की १३ माला संती कुंथी अरहो की १ माला आदि कई मंत्रों का जप करना उनका नित्यक्रम था। नवकार गिने बिना दवा-पानी भी नहीं लेती।
 - (९) योगासन-प्राणायाम सदा करती। रात साढ़े दस से पहले कभी नहीं सोती।
 - (१०) खाने में अनासक्ति रखती। जो आया वो खा लिया। साथ ही सहवर्ती सभी साध्वियों को भी देखती रहती कि किसने क्या खाया और क्या नहीं। कोई नहीं खाता तो उन्हें कहती पीछे अपने लिए तो रख लिया करो।
 - (११) शरीर से वह बहुत कोमल थी। पर थकान क्या होती है? शायद वह जानती नहीं थी। मुझे कहीं भी जाना होता मैं उन्हें दिन में ३-४ बार भी कहती तो बिना ननुनच वह सदा तैयार रहती। एक बार जयपुर चातुर्मास में शहर से सवाई मानसिंह अस्पताल दर्शन देने जाने का दिन में ३ बार काम पड़ा पर वह हर बार पूर्ववत् स्फूर्ति के साथ तैयार थी।
 - (१२) साध्वी करुणाश्री जी के लिए जितने भी विचार आए हैं वे सभी उनकी निश्चल हँसी, समता, सहिष्णुता, विनम्रता की मूर्ति आदि के रूप में आए। सुलझी व सकारात्मक सोच की तो वह जीवंत मिसाल थी। कभी मैं किसी बात का चिंतन करती तो वे बिना बुलाए और बतलाए कहती कि इस पर कल सोचेंगे तब तक स्वयं समाधान आ जाएगा। नहीं तो मेरे पर छोड़ दो।
 - (१३) उनकी प्रमोद भावना तो अविस्मरणीय है। कोई भी साध्वी कोई छोटा-सा काम भी कर देती तो उसकी बहुत-बहुत प्रमोद भावना भाती।
 - (१४) वह शरीर और मन दोनों से कोमल थी। इन दिनों लगभग ६ महीनों से खाना-पीना उनके लिए एक समस्या हो गई। वमन पात्र पास में रखना पड़ता। खाने की मनुहार करने वाली साध्वी को कभी-कभी हाथ से हटाना चाहिए तब समताश्री जी प्रायः कहती थोड़ा-सा आवेश आया है ना? खमतखामणा करो। फिर तो इतनी विनम्र हो जाती कि हम देखते ही रह जाते।
 - (१५) आराधना का प्रथम गीत समताश्री जी प्रायः उन्हें सुनाती। मर्यादाप्रभा जी से लोगस्स की पूरी माला सुनती, तेरापंथ प्रबोध सुनती। पुलकितयशा जी, कुसुमप्रभा जी, प्रभातप्रभा जी जप करवाती, गलती होते ही तत्काल 'मिच्छामि दुक्कड़' लेती।
 - (१६) ऐसी साध्वियों के विकास का ग्राफ संघ में बढ़ता रहे।
ऐसी करुणावान साध्वी जिनके लिए प्राप्त हर संदेश पत्र में उनकी करुणा, वात्सल्य, समता की छाप हमें देखने को मिली। उनकी यह गुणराशि हम सबमें भी अवतरित हो। शुभांशांसा।

साध्वी करुणाश्री जी की स्मृति सभा

नोखा।
तेरापंथ धर्मसंघ की वरिष्ठ शासनश्री साध्वी करुणाश्री जी के देवलोकगमन के बाद स्मृति सभा में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने कहा कि दीर्घ ५८ वर्ष की संयम सुखद प्रारंभ से गुरुदेव तुलसी ने मुझे सौंपा। हंसमुख तेजोमय चेहरा, मृदु मुस्कान वाली पुरुषार्थी साध्वी थी। नवकार मंत्र की प्रतिदिन माला व मंत्र सिद्धस्त जीवन बेदाग रहा। भीतर से स्वस्थ, सेवाभावी, क्षमतावान, मर्यादा-अनुशासन की जीती-जागती ज्योत थी। संयोग-वियोग नियति है। उनकी कमी खलती है। पुण्यवान का भाग्यवान हलुकर्मी साध्वी महान थी।

साध्वी समताश्री जी, साध्वी संवेगश्री जी, साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी पुलकितयशा जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी, साध्वी मर्यादाप्रभा जी ने सामुहिक भावपूर्ण श्रद्धांजलि गीत का संगान किया।

संसारपक्षीय भाई सुशील कुमार ने परिवार की शोभा और महान व्यक्तित्व की धनी विरल साधिका बताया। कुसुम देवी आंचलिया, भरत आंचलिया ने साध्वी करुणाश्री जी को मंत्र सिद्ध साधिका, पवित्रता की पर्याय बताया, श्रद्धा भाव रखे।

सभा अध्यक्ष हनुमानमल ललवानी, मंत्री इंद्रचंद्र बैद, गोपाल लुणावत, लाभचंद्र छाजेड़, दिलीप बैद, उपासक अनुराग बैद, सुनील बैद, तेयुप अध्यक्ष रूपचंद्र बैद, कन्या मंडल संयोजिका स्नेहलता चोरड़िया, सुमन मरोठी, महिला मंडल अध्यक्षा कुसुम छाजेड़, मंत्री मंजु बैद, महावीर मालू आदि अनेक वक्ताओं ने साध्वी करुणाश्री जी को आत्मार्षी, संयमी और सहजता, सरलता की प्रतिमूर्ति बताया और श्रद्धांजलि भावना अर्पित की।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का मंगल संदेश, मुख्य न्यासी महासभा कोलकाता से भंवरलाल बैद का पत्र, पदमचंद्र पटावरी का पत्र और साध्वी यशोमती जी, साध्वी परमयशा जी, साध्वी कनकश्री जी आदि के पत्रों द्वारा श्रद्धा भक्ति भावांजलि पढ़कर सुनाई गई। अंत में चार लोगस्स का ध्यान करके श्रद्धांजलि अर्पित की। संचालन साध्वी कुसुमप्रभा जी ने किया।

संघ में नाम कमायो है

● साध्वी समताश्री ●

धन्य-धन्य साध्वी करुणाश्री भाग सवायो है।
श्री तुलसी रै कर कमलां स्यूं, संयम रत्न मिल्यो।
महाप्रज्ञ री शुभ सन्निधि में, करुणा सुमन खिल्यो।
महाश्रमण सेवा फल पायो है।।

मला जपता भजनानन्दी, अपणै मैं रहता।
सदा साध में रखता माला, जाप करो कहता।
शक्ति रो श्रोत बहायो है।।

सगलां नै देता जीकारो, मधुर मधुर भाषा।
बालक बूढ़ा युवक युवतियाँ, बच्चा भी खाशा।
हृदय दरियो लहरायो है।।

आणै बालां नै कुछ देता, पूरो मंगल पाठ।
साधु सतियाँ रो मेलो बो, घणो सुहातो टाट।
भक्ति रो जोश दिखायो है।।

मैं तो पूरी स्वस्थ करो मत, चिंता थे म्हारी।
भीतर री दुनियां है उजली, चंदन री क्यारी।
ज्योति रो दीप जलायो है।।

बिना गिण्या नवकार मुंह में जल नहीं भरता हा।
पछे दवाई खाणो पीणो, सब कुछ करता हा।
मंत्र बल तेज बढ़ायो है।।

अठावन वर्षा तक साता घणी पुगाई ही।
कान, मान रो आदर करता राजुल मन भाई।
पुण्य पादप लहरायो है।।

वमन हुवै चाहे जीदोरो, पेट दर्द भारी।
फिर भी नहीं घबराया सतिवर, हृद हिम्मत धारी।
सूत्र समता रो पायो है।।

सदा एक सो चेहरो रहणो, बड़ी साधना है।
आत्मालोचन स्यूं निर्मलता, रही भावना है।
मुदित रहणो सिखलायो है।।

साध्वीप्रमुखाजी री बातां, घणी सुहाती ही।
समय समय संदेश पत्र पढ़ मन हरसाती ही।
अमृत रसपान करायो है।।

दर्शन करणै री अभिलाषा, घणी रही मन में।
ज्येष्ठ शुक्ल पांचम नै उतरया, अनशन रै रण में।
मनोरथ तीजो पायो है।।

लय : तावड़ा धीमो---

योग दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम

वसई (मुंबई)

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति, मुंबई के अंतर्गत क्षेत्र वसई एवं तेरापंथ युवक परिषद द्वारा सन सिटी क्षेत्र वसई (पश्चिम) में वृक्षारोपण का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मोहनलाल गुदेचा, अणुव्रत समिति से भगवतीलाल चौहान एवं तेयुप के अध्यक्ष नितिन संचेती व विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों और सदस्यों की इस कार्यक्रम में गरिमामय उपस्थिति रही एवं सभी ने हर वर्ष वृक्षारोपण करने का संकल्प किया।



दो सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ

गुवाहाटी।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्वावधान में 'आचार्य तुलसी सिलाई प्रशिक्षण केंद्र' प्रकल्प के अंतर्गत दो सिलाई प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की गई। पहला केंद्र गीता इंस्टीट्यूट (वर्षापाड़ा) में तथा दूसरा केंद्र कल्याण आश्रम में खोला गया। गीता कई वर्षों से स्थानीय तेरापंथ धर्मसंघ में सिलाई के प्रशिक्षण की सेवाएँ दे चुकी हैं। उन्होंने महिला मंडल के इस सहयोग के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। कल्याण आश्रम के पदाधिकारियों, सदस्यों द्वारा महिला मंडल की बहनों का सम्मान किया गया तथा मंडल द्वारा समय-समय पर किए जा रहे सहयोग की सराहना की गई।

इस अवसर पर अध्यक्ष रंजू खटेड़ ने अपने वक्तव्य में मंडल द्वारा चलाए जा रहे प्रकल्पों की जानकारी देते हुए भविष्य में भी सहयोग का आश्वासन दिया। मंत्री अंजना बैद ने कहा कि केंद्र द्वारा निर्देशित यह प्रकल्प महिलाओं के स्वावलंबन की दिशा में कारगर प्रयास है। इस प्रकल्प की प्रायोजिकाएँ रेणु सुराणा, अरुणा बैद, प्रतिमा सिंधी, ममता फुलफगर, सुमन मालू व नीतू सुराणा हैं। इस कार्य में प्रकल्प की संयोजिका अरुणा बैद का सराहनीय प्रयास रहा। महिला मंडल की पदाधिकारी बहनों, परामर्शक बहनों तथा कार्यसमिति बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

वृद्धाश्रम में वाटर प्यूरीफायर मशीन

चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्वावधान में 'तृप्ति एक बूंद' प्रोजेक्ट के अंतर्गत एक वाटर प्यूरीफायर मशीन वूमैन्स आश्रम में लगाई गई, जहाँ २५ महिलाएँ रहती हैं और सभी ५० से ऊपर उम्र वाली हैं। जब वृद्धाश्रम में बहनें पहुँचीं तो वे बहुत खुश हुईं, पानी की मशीन देने के लिए तेमम का धन्यवाद किया और बोले हमें इसकी जरूरत थी, आपने पूरा कर दिया। बहनों ने चॉकलेट-बिस्कुट आदि भी वितरित किए।

जहाँ आवश्यकता हो वहाँ वाटर प्यूरीफायर मशीनें लगावाई और ३०००० मास्क तथा सेनेटाइजर दिया गया। कोविड-१९ के लिए बने होम कोरेंटाइन सेंटर में खाना पहुँचाया। लगभग ५०० खाने के पैकेट दिए गए।

तेमम, चेन्नई सेवा-समर्पण में हमेशा अग्रसर रहा है, संपूर्ण टीम का भरपूर सहयोग महिला मंडल को मिला। वाटर प्यूरीफायर मशीन के सहयोगी जयंतीलाल विजय सुराणा रहे। संचालन निर्मला छल्लाणी ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन भूतपूर्व अध्यक्ष सुमन बरमेचा ने दिया।

महिला मंडल के विविध आयोजन

सास-बहू कॉन्टेस्ट

गुवाहाटी।

अभातेमम द्वारा निर्देशित तेमम द्वारा अध्यक्षा रंजू खटेड़ की अध्यक्षता में सास-बहू कौबो कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत दोनों सास-बहू को एक सुंदर परिधान में सेल्फी लेनी थी तथा काव्यात्मक रूप में १० पंक्तियाँ लिखनी थी, जिसमें दोनों एक-दूसरे की कोई तीन आदत बदलना चाहते हैं। प्रतियोगिता की निर्णायक मंडल कोषाध्यक्ष कुसुम कोटेचा थी।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाली सभी बहनों की प्रविष्टियाँ बहुत ही रोचक व सुंदर थी। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर अमिता-कोमल भंसली, द्वितीय स्थान पर शांति-संध्या कोठारी तथा तृतीय स्थान पर शायर-पिंकी सिंधी रहे। सभी विजेताओं को महिला मंडल की तरफ से बहुत-बहुत बधाई व उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना।

सास-बहू कौबो कॉन्टेस्ट का आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम द्वारा सास-बहू कौबो कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में सास-बहू को एक-दूसरे के साथ सेल्फी लेकर १० लाइनों में अपनी बात को कविता के रूप में लिखकर भेजना था। बहनों ने अच्छा उत्साह दिखाया और सास-बहू की ७ जोड़ियों ने इस कॉन्टेस्ट में भाग लिया और सुंदर सेल्फी के साथ कविता में अपनी बात बताई।

इस प्रतियोगिता में जज के रूप में तेरापंथ महिला मंडल के गुजरात प्रभारी भारती पारख ने सेवाएँ दी। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा—पिंकी विमलादेवी सिंधवी प्रथम, रीतिका मंजु गेलड़ा द्वितीय एवं कोमल सुशीला देवी हिरण तृतीय रहीं तथा सेजल हंसादेवी मेहता को प्रोत्साहन पुरस्कार मिला। संयोजिका नयना मांडोत का श्रम सराहनीय रहा।

साधारण सभा एवं अन्नपूर्णा कार्यशाला संबंधी विवेचन

दक्षिण मुंबई।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम के तत्वावधान में महाप्रज्ञ विद्यानिधि स्कूल में साधारण सभा रखी गई। सान्निध्य समणी मधुर प्रज्ञा जी एवं सहवर्ती समणीवृंद का रहा। प्रथम चरण कार्यशाला अन्नपूर्णा का शुभारंभ नवकार महामंत्र समणी मधुर प्रज्ञा जी द्वारा मंगलाचरण-कन्या मंडल की बहनों द्वारा। भाषण-उपसिका संयोजिका

सुमन कावड़िया द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता समणी मधुरप्रज्ञा जी द्वारा अन्न के आध्यात्मिक व भौतिक पक्ष के बारे में तथा संस्कारों का संपोषण अन्न के द्वारा कैसे होता है? इसका कथा के द्वारा सुंदर विवेचन किया गया। मुंबई पूर्व अध्यक्ष सुमन बच्छावत ने कार्यशाला अन्नपूर्णा के बारे में अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। मंगलपाठ समणी मधुरप्रज्ञा जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका सुमन कावड़िया ने किया।

द्वितीय चरण साधारण सभा चुनाव-मनाव एवं पहचान पत्र वितरण—सुमन बच्छावत, मीना सुराना, श्वेता सुराना की अध्यक्षता में मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया और २०१९-२०२१ के मिनिट्स का वाचन-सुमन कावड़िया ने किया। वार्षिक प्रतिवेदन-उर्मिला कच्छारा द्वारा तथा आय-व्यय का विवरण रेणु डागलिया द्वारा किया गया। तेयुप से पवन बोलिया, मंत्री नितेश धाकड़, अशोक धींग, प्रदीप ओस्तवाल ने कार्यकाल को सफलतम बताते हुए सभी को बधाई दी।

निवर्तमान मंत्री श्वेता सुराना, अणुव्रत कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया, कार्यकारिणी सदस्या पुष्पा कच्छारा, ज्ञानशाला से विजय डागलिया ने भावों की अभिव्यक्ति दी। चुनाव अधिकारी सुमन बच्छावत ने २०१९-२०२१ की कार्यकारिणी को निरस्त करते हुए निवर्तमान संयोजिका एवं सह-संयोजिका को बधाई दी नव निर्वाचित टीम को संघ समर्पण के साथ काम कैसे सुव्यवस्थित करें, उसके औपचारिक नियमों से अवगत करवाया। इसी के साथ नव निर्वाचित संयोजिकाओं के नाम घोषित किए। कार्यकारिणी सदस्यों एवं सह-संयोजिका रुक्मणी कच्छारा ने तपस्वी भाई-बहनों, अंजना सती नाटक, विवाह प्रसंग एवं गृह प्रवेश के प्रायोजकों का सम्मान किया। सह-संयोजिका नूतन सोनी ने २ वर्ष का अनुभव शेयर किया। आभार ज्ञापन सह-संयोजिका पूजा राठौड़ ने किया। मंगल पाठ समणी मधुर प्रज्ञा जी द्वारा हुआ। ४० बहनों की उपस्थिति रही। संचालन संयोजिका सुमन कावड़िया द्वारा किया गया।

आचार्य तुलसी सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन

चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्वावधान में समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत आचार्य तुलसी सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन किया गया। साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में बैनर का अनावरण किया गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी सिलाई प्रशिक्षण केंद्र आचार्य

तुलसी के नाम से खोला जा रहा है, आचार्य तुलसी ने महिला शक्ति को सशक्त मंच दिया, जिससे आज महिलाएँ आध्यात्मिक गतिविधियों के साथ सामाजिक गतिविधियाँ भी सुचारु रूप से कर रही हैं, साध्वीश्री जी ने कहा कि महिला मंडल, चेन्नई जागरूकता के साथ हर कार्य को संपादित करती है।

अध्यक्षा शांति दुधोड़िया ने महिला मंडल की बहनों का परिचय करवाया और साध्वीश्री जी के प्रति अनंत-अनंत कृतज्ञता ज्ञापित की। अभातेमम की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य अनिता चोपड़ा ने मंडल के कार्यों की सराहना करते हुए शुभकामनाएँ संप्रेषित की। सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन नमस्कार महामंत्र से हुआ।

अध्यक्षा शांति दुधोड़िया ने प्रशिक्षण केंद्र के रख-रखाव के लिए महत्त्वपूर्ण

जानकारी दी एवं सिलाई प्रशिक्षण केंद्र की संयोजिका निर्मला छल्लाणी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम संयोजिका हेमलता नाहर की कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। सिलाई प्रशिक्षण केंद्र के अध्यापक ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रशिक्षण केंद्र में मशीनों के सहयोगी पारसमल राजेश खिवेसरा एवं Niralya Lights रहे एवं २ फेन के सहयोगी Shoba Electricals वालों का महत्त्वपूर्ण सहयोग मंडल परिवार को मिला।

कार्यक्रम में अभातेमम की राष्ट्रीय कार्यकारिणी अनिता चोपड़ा, अध्यक्ष शांति दुधोड़िया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पुष्पा हिरण, परामर्शक उषा बोहरा, सुमन बरमेचा, कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर, सहमंत्री कंचन भंडारी, प्रचार-प्रसार मंत्री संगीता आच्छा, सूरज बोधरा, कनक पुगलिया, रानी मांडोत, निर्मला छल्लाणी आदि अनेक बहनें उपस्थित रहीं। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष पुष्पा हिरण ने किया।

आध्यात्मिक गतिविधियों के केंद्र बनते तेरापंथ भवन

चेन्नई।

जैन तेरापंथ नगर, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के निर्देशन में तेरापंथ भवन का जैन संस्कार विधि द्वारा विधिवत उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर मंगल सान्निध्य प्रदान करते हुए साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि भवन जहाँ सामाजिक गतिविधियों का केंद्र बिंदु होता है वहीं धार्मिक संस्थाओं द्वारा संचालित भवन आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र बनता है। वहाँ पर श्रावक-श्राविकाएँ अपनी धार्मिक गतिविधियों से उपासना कर अपने आत्मा के ऊर्ध्वारोहण की साधना-आराधना कर सकते हैं। जैन संस्कार विधि द्वारा शुभारंभ संस्कार संपन्न करवाने वाले स्वरूपचंद दांती, पदमचंद आंचलिया, हनुमान सुखलेचा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की। मुख्य अतिथि प्यारेलाल पितलिया के बारे में कहा कि वे भी २००५ के चातुर्मासिक समय में धर्मसंघ में निकटता से जुड़कर समाज सेवा संलग्न बने। आज भी उन्होंने इस भवन के लिए अपना विशेष योगदान दिया।

इससे पूर्व अभातेयुप के सेवा, संस्कार, संगठन के त्रिआयामों में से संस्कार के अंतर्गत तेरापंथ भवन का अभातेयुप संस्कारक स्वरूपचंद दांती, पदमचंद आंचलिया, हनुमान सुखलेचा ने विविध मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार करवाया। नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ शुभारंभ संस्कार में हनुमान सुखलेचा और तेयुप मंत्री विशाल सुराणा ने सभी संस्कारकों एवं अतिथियों का तिलक व मौली बांधकर स्वागत किया। संस्कारक स्वरूपचंद दांती, पदमचंद आंचलिया ने चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति में भावभीनी वंदना, लोगस्स, मंगलभावना स्तुति के साथ विविध मंगलमय मंत्रों का समुच्चारण किया। संस्कारकों द्वारा ट्रस्ट मंडल को शुभ मंगलकामना के साथ मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

साध्वी अणिमाश्री जी के सामुहिक मंगलपाठ के स्मरण के बाद मुख्य अतिथि प्यारेलाल पितलिया ने भवन का फीता खोला। आध्यात्मिक रक्षा के लिए साध्वीश्री जी ने दिशा रक्षाकवच मंत्र एवं नमस्कार महामंत्र का जाप किया। माधावरम कोषाध्यक्ष गौतम समदड़िया ने सभी का स्वागत किया। टीपीएफ के अध्यक्ष सुरेश सकलेचा, नवीन बोहरा ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप उपाध्यक्ष एवं अभातेयुप कार्यकारी सदस्य मुकेश नवलखा ने जैन संस्कार विधि द्वारा शुभारंभ संस्कार करवाने के लिए अभातेयुप संस्कारकों को आमंत्रित करने के लिए आभार ज्ञापन किया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी माधावरम् ट्रस्ट द्वारा भवन के लिए विशेष अनुदान हेतु प्यारेलाल पितलिया परिवार का अभिनंदन किया। ट्रस्ट द्वारा जैन संस्कार विधि से शुभारंभ संस्कार संपन्न करवाने के लिए तेयुप का भी सम्मान किया।

इस अवसर पर माधावरम् श्रावक समाज के साथ तेरापंथ सभा मंत्री प्रवीण बाबेल, व्यसरपाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष ललित आंचलिया इत्यादि अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

तेयुप ब्लड डोनेशन ड्राइव के आयोजन विरार।

अभातेयुप की शाखा तेयुप, विरार ने कोरोना वैश्विक महामारी की इस आपदा के समय में तीसरा ब्लड बैंक का आयोजन जैन स्थानक, विरार में आयोजित किया। जिसमें ३५ यूनिट रक्त इकट्ठा किया गया। ब्लड बैंक में रक्त की माँग को देखते हुए तीसरे कैंप का आयोजन किया गया। सभी युवा साथियों व महिला मंडल का अच्छा सहयोग रहा।

रक्तदान शिविर का आयोजन एचबीएसटी, हनुमंतनगर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेयुप ने सफलतापूर्वक ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया। कैंप का आगाज नमस्कार महामंत्र से किया गया। कैंप का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। तेयुप अध्यक्ष पवन बोधरा ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि इन विषम परिस्थितियों में सभी को रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए। मंत्री धर्मेश कोठारी ने बताया कि इस कार्यक्रम में परिषद का यह तीसरा रक्तदान शिविर है।

इस शिविर में कुल 9५ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर के आयोजन में बंगलौर मेडिकल सर्विसेस ट्रस्ट का योगदान रहा। शिविर की सफलता में संयोजक महावीर बोधरा का विशेष श्रम रहा।

कोविड वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन

सिलीगुड़ी।

तेयुप द्वारा कोविड-२ महामारी को ध्यान में रखते हुए कोविड वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन किया गया। तेयुप अध्यक्ष संजय छाजेड़ ने बताया कि यह कैंप सिलीगुड़ी तेरापंथी समाज के जो भी परिवार अभी तक टीकाकरण से वंचित रह गए हैं उनके लिए एक अवसर उपलब्ध करवाने हेतु बिलकुल निःशुल्क रखा गया है। पहले आओ पहले पाओ के तर्ज पर 900 तेरापंथी सदस्यों को टीका लगवाया गया।

इस कैंप में मातृ संस्थाएँ तेरापंथी सभा, तेमम एवं तेयुप के सदस्यों ने बड़-चढ़कर कैंप को सफल बनाने में अपनी भूमिका निभाई। कैंप के संयोजक में तेयुप के सदस्य पंकज बाँटिया, अमित पारख, मुदित बोधरा, सचिन आंचलिया, विनयश्री मालू, अंकित सेठिया, प्रीतम

बोकड़िया ने अहम भूमिका निभाई।

सभा के उपाध्यक्ष मदन संचेती, मंत्री किशन आंचलिया, सहमंत्री रणजीत बोधरा, महिला मंडल से मंत्री संगीता घोषल, मंजू बैद, सुमन बैद एवं मीडिया प्रभारी शशि बैद का सरहनीय योगदान रहा। तेयुप के मंत्री सुशील मालू ने आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी के प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रकट किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कांकरोली।

तेयुप मंत्री दिव्यांश कच्छारा, कोषाध्यक्ष रितेश टुकलिया, अध्यक्ष धनेंद्र मेहता, परामर्शक मुकेश सोनी आदि ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर मुनि सुरेश कुमार जी स्वामी एवं मुनि रमेश कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में जड़ियाँ कॉलेक्स में पूरे समाज के समाजजनों के साथ योग के क्रम को स्वीकार कर अंगीकार कर योग को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया।

योगाभ्यास मुनि संबोध, मुनि मेधांश ने प्रेक्षा मेडिटेशन के साथ करवाया और सुरेश बोधरा ने योग के अनेक आसनों के द्वारा सभी को लाभान्वित किया।

सामूहिक सामायिक साधना

अहमदाबाद।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में सामूहिक सामायिक का आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। साध्वी रमावती जी एवं साध्वी हिमश्री जी ने गणाधिपति तुलसी के जीवन संघर्ष, काव्य एवं साहित्य रचना और सामायिक रुढ़िवाद के बदलाव के बारे में मार्मिक जानकारी के साथ प्रेरणा प्रदान की।

तेयुप अध्यक्ष पंकज डांगी ने गणाधिपति तुलसी के अवदानों को गुणानुवाद करते हुए उनके प्रति भावांजलि अर्पित की। तेरापंथ सभाध्यक्ष के साथ अन्य भगिनी संस्थाओं के अध्यक्ष व प्रतिनिधियों ने गणाधिपति तुलसी के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। सामूहिक सामायिक साधना में अभातेयुप सदस्यों, तेयुप पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यों के साथ अनेक गणमान्य श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

आलोचना का जवाब जुबान से नहीं, कार्य से दें : आचार्यश्री महाश्रमण

आक्या, मंदसोर, २६ जून, २०२१

विनय की पराकाष्ठा के धनी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर आक्या ग्राम के सरकारी विद्यालय में पधारे। विनयमूर्ति ने फरमाया कि शास्त्रकार ने कहा है कि गुस्सा प्रीति का नाश करने वाला होता है। यह आदमी की दुर्बलता ही माननी चाहिए कि कभी-कभी आवेश आ जाता है। गुस्सा आ जाता है। बाद में गुस्सा करने वाला पश्चात्ताप भी करता है। एक बार तो अंट-संट, उचित-अनुचित बोल देता है।

यह गुस्सा आत्मा के लिए भी अहितकर कर्म-बंधकारक कषाय है। व्यवहार में भी अच्छा नहीं। आदमी जितना शांति में रहता है, वह बढ़िया बात होती है। घास-फूस है, वहाँ चिंगारी पड़ेगी तब तो वह आग प्रज्वलित हो सकती है। एकदम सूखा मैदान-मिट्टी है, वहाँ चिंगारी पड़ेगी तो क्या लपटें उठेंगी। इस संदर्भ में हमें बिना घास-फूस का मैदान बनना चाहिए। कोई भले कह दे, हमें कोई दिक्कत नहीं, गुस्सा नहीं।

गृहस्थ जो परिवार-समाज में रहते हैं, वो पारिवारिक दृष्टि से देखें कि गुस्सा, आवेश है, वो परिवार में शांति भंग करने वाला बन सकता है। अनावश्यक खींचतान न करें। रस्सी को खींचेंगे तो रस्सी टूट सकती है। दोनों गिर सकते हैं। एक ने ढील छोड़ दी तो खींचने वाला ही गिरेगा। दोनों ने ढील छोड़ दी तो कोई नहीं गिरेगा। खींचतान फालतू काम की नहीं होती। खींचतान से गुस्सा आ सकता है।

साधु क्षमामूर्ति-शांतिमूर्ति होना चाहिए। ऋषि-साधु होते हैं, वो महान प्रसाद वाले प्रसन्नता वाले होते हैं। गुस्सा आता है, तो उसे कम करने का उपाय क्या करें? शास्त्र में कहा गया है—‘उवसणे णे कोहं।’ उपशम से गुस्से को शांत करें। गुस्सा अग्नि है, उपशम जल है। गुस्सा शांत करने का प्रयोग समझाया।

गुस्सा आने लगे तो लंबा श्वास लें। मौन रखें या वो स्थान छोड़ दें। संत वह होता है, जो शांत होता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि साधु या अन्य किसी पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। गुस्सा किसी के लिए काम का नहीं। किसी को कहना पड़े तो ऊपर से भले कठोरता हो, पर भीतर में कोमलता रहे। साधु को गुस्से से बचना चाहिए।

गुस्सा दो तरह का होता है—एक तो सिर्फ वाचिक कुछ कहना, दूसरा मन में आवेश आना। आत्म प्रदेश में तेजी-उत्पत्ति नहीं आनी चाहिए। साधु का कषाय प्रतनु-पतला रहना चाहिए। गृहस्थों को भी ध्यान रखना चाहिए कि ज्यादा गुस्सा काम का नहीं है। गुस्सा मनुष्य का शत्रु होता है।

आलस्य मनुष्यों के शरीर में रहने वाला शत्रु है, तो गुस्सा भी दिमाग में रहने वाला, गुस्सा योग रूप में न आए। मन में भी नहीं आना चाहिए। राड़-झगड़े-कलह में कोई सार नहीं है, निःसार है। मैत्री और शांति का भाव रखना चाहिए।

पूज्य मधवा गणि के समय डालमुनि की पानी वाली घटना प्रसंग को समझाया जहाँ उचित लगे बात का स्पष्टीकरण करना चाहिए। फालतू बात कोई कह दे, पर गुस्सा-आवेश नहीं, निंदा नहीं। निंदा-आलोचना किसी की भी हो सकती है, इसका जवाब जबान से दिया जा सकता है पर दूसरा उपाय है, इसका जवाब अच्छा काम करके करो।

अच्छा कार्य करते रहेंगे तो निंदा करने वाले भी कभी प्रशंसा करने लग जाएँगे। कल्याण परिषद के अनेक पार्षद आए हुए हैं, अनेक संस्थाओं से जुड़े हैं। कोई संस्था की भी निंदा-आलोचना कर दें। कर दी तो कर दी, अपना काम बढ़िया करते जाओ। निंदा वाली बात में सार नहीं है, तो क्यों दिमाग में भार दें।

साधु हो या गृहस्थ, पदाधिकारी हो या कर्मचारी गुस्सा सामान्यतया या लगभग किसी के लिए काम का नहीं है। बात कड़ी कही जा सकती है, बात बड़ी भी कही जा सकती है, पर बिना गुस्से के शांति से पेश आना चाहिए। शास्त्रकार ने कहा है कि गुस्सा प्रीति का नाश करने वाला है। हमें गुस्से का ही नाश कर देना चाहिए।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित आचार्यश्री महाश्रमण जी की दो कृतियाँ ‘धर्म एक समाधान’ और ‘विकास का राजमार्ग’ प्रकाशित हुई है। कन्हैयालाल जैन एवं मनोज लुणिया ने दोनों कृतियाँ पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में समर्पित की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि कन्हैयालाल अणुव्रत से जुड़े रहे थे। दिल्ली समाज के खास आदमी हैं। चित्त की स्वस्थता रहनी चाहिए। अनुकूलता-प्रतिकूलता तो आती रहती है। जप की साधना चलती रहे। ये जो दो किताबें परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ जी की हैं, गुरुदेव विद्वान मनीषी थे। जैविभा को उनका साहित्य आगे लाने का मौका मिल रहा है। पढ़ने वालों को अच्छा ज्ञान समाधान मिलता रहे, मंगलकामना।

शपथ ग्रहण समारोह

कांटाबांजी (ओडिशा)।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। तेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष हेमंत जैन आदि को बलांगीर के समाजसेवी मनोज जैन ने शपथ दिलाई। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि युवा स्वर्ग की सच्ची अनुभूति होती है। समाज का यथार्थ बिंब है। वह शक्ति का प्रतीक तथा ऊर्जा का पुंज है। उसके कंधों पर समाज का महान दायित्व है। युवा वह है जो गतिशील है, वर्तमान में जीता है, सुख-दुःख में सम रहता है। दूसरों के हितों की सुरक्षा करता है। स्वार्थ से हटकर परमार्थ का जीवन जीता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि कार्य करने वाला कार्यकर्ता होता है। कार्यकर्ता नाम के खातिर कार्य ना करें, वह निष्काम व्यक्ति परोपकार की भावना से कार्य करें। हर समय मन में कार्य करने की धुन रहे समाज ने मुझे सेवा का अवसर दिया तो अपना कार्य छोड़कर संघ सेवा के लिए ज्यादा से ज्यादा समय दूँ। पद को भार नहीं उपहार समझकर कार्य करूँ। कार्यकर्ता के लिए चारित्र बल का होना जरूरी है।

मुनि परमानंद जी ने कहा—युवा शक्ति का स्रोत होता है। तेयुप के ३ आयाम हैं—सेवा, संस्कार, संगठन। इस अवसर पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष हेमंत जैन, निवर्तमान अध्यक्ष मनीष जैन, प्रांतीय सभा के सहमंत्री सुमित जैन, अंकित जैन, सरिता जैन, तेयुप के अध्यक्ष भिलेश जैन, प्रांतीय सभा के संगठन मंत्री संजीव जैन, प्रांतीय सभा के पूर्व अध्यक्ष ओमप्रकाश जैन ने अपने भावों की प्रस्तुति देते हुए तेयुप के अध्यक्ष सहित सभी युवाओं के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना का आभार मंत्री पीयूष जैन ने किया। इस अवसर पर कुणाल कुमार, अर्पण जैन, अमित जैन, विकास जैन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।



लोभ की चेतना को कम करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

ढोढ़र, रतलाम, २८ जून, २०२१

ज्ञानपुंज आचार्यश्री महाश्रमण जी आत प्रातः विहार कर सरस्वती शिशु विद्या मंदिर पधारे। प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए ज्ञानमूर्ति ने फरमाया कि चार कषायों में चौथा कषाय है—लोभ। गुस्सा, मान-अहंकार, माया भी कषाय है। तो लोभ भी कषाय है। चारों कषायों में सबसे ज्यादा लंबे काल तक रहने वाला कषाय एक संदर्भ में लोभ है।

साधु साधना करते-करते एक दुराहे पर पहुँचता है। आठवें गुणस्थान से दो रास्ते निकलते हैं। एक रास्ता उपशम श्रेणी का, दूसरा रास्ता क्षपक श्रेणी का है। उपशम श्रेणी का रास्ता बंद गली का रास्ता है। जहाँ जाकर वापस आना पड़ता है। वहाँ आगे मंजिल की कोई बात नहीं है। वह ग्यारहवें गुणस्थान में जाता है। वापस नीचे गिरना ही पड़ेगा, कोई उपाय ही नहीं है।

उपशम श्रेणी की अपेक्षा क्षपक श्रेणी का रास्ता बढ़िया है। आठवें के बाद क्षपक श्रेणी हो तो उसी जन्म के बाद मोक्ष अवश्यसंभावी है, ऐसा प्रतीत होता है। चार कषायों में से प्रथम तीन कषाय तो नौवें गुणस्थान में ही समाप्त हो जाते हैं। अंत में एक लोभ बचता है। दसवें गुणस्थान तक भी लोभ सूक्ष्म संपराय में विद्यमान रहता है और कषायों को आश्रय देने वाला लोभ कषाय हो सकता है।

ये लोभ की वृत्ति सामान्य आदमी में होती है। लोभ से हिंसा-झूठ ये प्रवृत्तियाँ हो सकती हैं। अशुभ योगों के रूप में हो सकती है। कहा जाता है कि पाप का बाप लोभ है। सब पापों की जड़ में ये लोभ काम करता है। लोभ को जीतने का प्रयास करें। लोभ को जीतने का उपाय है, संतोष को धारण करो।

प्रतिपक्ष की भावना करने से पक्ष को खत्म करने का प्रयास हो सकते हैं। लोभ को अलोभ से जीता जा सकता है। ये सब अभ्यास, अनुप्रेक्षा, संकल्प की



बातें हैं। त्याग की भावना को बढ़ाएँ तो लोभ को कृश करने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। जिसका लोभ खत्म हो गया, मानो उसका दुःख मोटा-मोटी रूप में खत्म हो गया है।

जिसके लोभ नहीं है, उसके फिर परिग्रह भी नहीं होता। साधु के सर्व परिग्रह का आजीवन त्याग होता है। लोभ और अपरिग्रह में विरोध है। गुरुदेव तुलसी के दिल्ली के पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रसंग को समझाया। साधु में अपरिग्रह की चेतना होनी चाहिए। एक प्रसंग से समझाया कि अपरिग्रही साधु को ही गुरु बनाना चाहिए। जिसने त्याग दिया, उसका सब हो गया। अकिंचन साधु त्रिलोकी का नाथ हो सकता है।

परिग्रह है तो हिंसा को मौका मिल सकता है। आगमों में आरंभ और परिग्रह का जोड़ा बताया गया है। साधु इनके त्यागी होते हैं। गृहस्थ यह सोचे—मैं सदा आरंभ जीवी, साधु अहिंसा शूर है—। गृहस्थ सोचे कि मैं साधु के सहयोग में

संविभागी बनूँ। मेरा परिग्रह साधु के काम आएगा तो वह व्रत में चला जाएगा। साधु की संयम की साधना में गृहस्थ सहयोगी बने।

धन्य है, वे साधु जो अपरिग्रही हैं। गरीब वह है, जो परवशता में अभाव भोगता है। साधु तो स्ववशता से त्यागी बने हैं। साधु तो अमीरों से भी अमीर है। जो परिग्रह को छोड़ देता है, वो महात्यागी है। परिग्रही को चैन नहीं मिलता है। आदमी अपरिग्रह की दिशा में आगे बढ़ें। लोभ की चेतना को कम करने का प्रयास करें। अलोभ से लोभ को हम जीते, तो कभी मोक्ष की प्राप्ति भी हम कर सकेंगे।

तेरापंथ धर्मसंघ की एक विशिष्ट संस्था जैन विश्व भारती। उसके द्वारा अनेक कार्य संपादित होते हैं, उनमें एक कार्य है, साहित्य प्रकाशन आदि का। जैविभा के अध्यक्ष मनोज लुणिया ने एक पुस्तक 'विनय की विलक्षण साधिका-साध्वीश्री विनयश्री 'प्रथम' का

जीवन-वृत्त जो साध्वी विश्रुतप्रभा जी ने लिख है, पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित की। आगम-मंथन प्रतियोगिता तेरहवाँ

भाग रायषसेणियं आगम प्रतियोगिता की प्रश्न-पुस्तिका भी पूज्यप्रवर को समर्पित की।

पूज्यप्रवर ने इस प्रसंग पर फरमाया कि ये दो चीजें जैविभा की ओर से रायषसेणियं पर आधारित प्रश्न-पुस्तिका है। रायषसेणियं में राजा परदेशी का आख्यान है। आस्तिक-नास्तिक दर्शन को समझने के लिए ये रायषसेणियं हैं। सुंदर कथानक-घटना प्रसंग है। इससे जुड़ने वाले लोग हैं, वो मंथन करें तो नवनीत भी मिल सकता है।

साध्वी विनयश्री जी 'प्रथम' की माँ साध्वी केशरजी थी। उनका यह जीवन-वृत्त पाठक वर्ग को अच्छी धार्मिक-आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाला सिद्ध हो, मंगलकामना। जैविभा जो ऐसे उपक्रमों के मूल में है, ज्ञान की बहुत अच्छी प्रवृत्ति है। जैविभा अच्छा धार्मिक, आध्यात्मिक सहयोग देती रहे।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि अज्ञान दुःख का कारण होता है।

शासनश्री साध्वी करुणाश्रीजी का देवलोकगमन

नोखा।

शासनश्री साध्वी करुणाश्री जी का जन्म संवत् १९६६ माघ शुक्ला-६ को सुजानगढ़ में हुआ। साध्वीश्री का जन्म का नाम कमला कुमारी था। आपके पिता चंपालाल एवं माता का नाम सोहनी देवी बोथरा था।



आपकी दीक्षा संवत् २०२० पौष शुक्ला-१०, आचार्यश्री तुलसी द्वारा सुजानगढ़ में हुई।

वैराग्य : पारमार्थिक शिक्षण संस्था काल – डेढ साल।

आपने दशवैकालिक, नंदी, बृहत्कल्प। पच्चीस बोल, आदि १५ धोकड़े। कालु कौमुदी, जैन सिद्धांत दीपिका, भिक्षु न्याय कर्णिका, मनोनुशासन, षडदर्शन समुच्चय, भक्तामर, कल्याणक मंदिर, शांत सुधारस, कर्तव्यपट्टिशिका, शिक्षाषण्णरति, देवगुरु स्रोत। चौबीसी, आराधना, शील की नौ बाड़, २२ परीषहों की ढालें, आचार बोध, संस्कार बोध, व्यवहार बोध तथा अग्नि परीक्षा आदि कई व्याख्यान कंठस्थ हैं।

आप प्रायः सभी आगम एवं योग आदि अन्य साहित्य का वाचन करती थीं। आपने योग्यतर परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने उपवास, २, ३, ५, ८, लगभग ७००, ६, ७, १, १, तपस्याएँ कीं।

बहिर्विहार : दीक्षा लेने के बाद अब तक साध्वी राजीमती जी (रतनगढ़) के सिंघाड़े में रही।

आपने अनेक सुदूर प्रांतों की यात्राएँ कीं।

आपको 'शासनश्री' अलंकरण संवत् २०७३, माघ शुक्ला-७ को आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा सिलीगुड़ी में दिया गया।

साध्वी करुणाश्री जी ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, रात्रि २:३७ मिनट लगभग १६ मिनट पर चौविहार अनशन का प्रत्याख्यान कर देवलोकगमन सिंधार गईं। ११:१५ बजे सागरी अनशन का प्रत्याख्यान करवाया गया।

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

